ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 11 मार्च 2018 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 11 मार्च 2018 से 17 मार्च 2018

चैत्र कृ.– 09 ● वि० सं०–2074 ● वर्ष 59, अंक 10, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 194 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

टंकारा में ऋषि बोधोत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न

दिनाँक 07 फरवरी से 14 फरवरी 2018 तक ऋषि बोधोत्सव पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी की अध्यक्षता में उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। ऋग्वेद पारायण यज्ञ विद्यालय के आचार्य रामदेव के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ। पूरे सप्ताह आर्य जगत् के प्रसिद्ध गायक एवं भजनोपदेशक श्री सत्यपाल पथिक एवं श्री दिनेश पथिक (अमृतसर) के मधुर भजन प्रातः एवं सायं होते रहे।

11 फरवरी 2018 को रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किए जिसमें भजन, कव्वाली, भाषण, लघु नाटिका इत्यादि सम्मिलित थे। 12 फरवरी 2018 से योग एवं स्वास्थ्य सत्र स्वामी शान्तानन्द जी (भुज) के नेतृत्व में चलाया गया, युवा उत्सव एवं पारितोषिक वितरण समारोह की अध्यक्षता स्वामी शानतानन्द जी (भुज) द्वारा की गई। मुख्य अतिथि के रूप में श्री वाचोनिधी आर्य (गांधीधाम) उपस्थित थे।

शिवरात्रि एवं बोधोत्सव का मुख्य कार्यक्रम13 फरवरी 2018 को रहा जिसमें प्रातः पूर्णाहुति का यज्ञ आरम्भ किया गया। इसमें मुख्य यजमान श्री जे पी शूर, निदेशक, डी.ए.वी. एडेड स्कूल सहित मुंजाल परिवार के श्री योगेश मुंजाल, श्री सुरेश मुंजाल तथा अन्य ट्रस्टी उपस्थित थे।

ध्वजस्थल पर ट्रस्ट के वयोवृद्ध ट्रस्टी श्री लधाभाई पटेल ने ट्रस्ट की ओर से श्री जे पी शूर को पगड़ी पहनाई और फिर 150 प्रतिनिधि आर्य महानुभावों ने उनका स्वागत किया। भारत का कोई ऐसा प्रान्त नहीं था, जिसका प्रतिनिधित्व इस अवसर पर न हुआ हो। श्री जे पी शूर ने ध्वजारोहण किया और श्री सत्यपाल पथिक ने ध्वजगीत गाया। एक विशेष मंच से ओ३म् ध्वज लहराकर शोभायात्रा का आरम्भ श्री जे पी शूर द्वारा किया गया।

श्री योगेश मुंजाल द्वारा नवनिर्मित स्व. महात्मा सत्यानन्द मुंजाल गुरुकुल भवन का उद्घाटन पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न किया गया।

श्री ओंकार नाथ सिलाई कढ़ाई केन्द्र का उद्घाटन श्री सुनील मानकटाला द्वारा किया गया।

श्रद्धांजलि सभा का आयोजन श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात की अध्यक्षता में किया गया जिसमें विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री जे पी शूर उपस्थित थे। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. रूप किशोर शास्त्री, वेद विभागाध्यक्ष, गुरुकुल कांगड़ी ने अपने विचार रखे। स्वामी संकल्पानन्द स्मृति सम्मान स्वामी सवितानन्द सरस्वती (रांची) एवं श्री कमलेश

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

आर्य समाज (कॉलेज विभाग) बटाला द्वारा स्वामी दयानंद जयंती एवं ऋषिबोधोत्सव का आयोजन

आर्य समाज (कॉलेज विभाग) बटाला के तत्त्वावधान में "स्वामी दयानंद सरस्वती जयंती एवं ऋषिबोधोत्सव" का आयोजन डॉ. एम.आर. एस. भल्ला डी.ए.वी. गर्ल्ज हाई स्कूल, बटाला में किया गया। श्री बालकृष्ण मित्तल, सचिव डी ए वी कॉलेज प्रबन्धकर्तृ समिति, नई दिल्ली मुख्यतिथि स्वरूप एवं श्री जगदीश राज साहनी, चेयरमैन, स्थानीय समिति विशेष अतिथि स्वरूप उपस्थित हुए।

इस अवसर पर हवन यज्ञ का आयोजन किया गया, वैदिक मन्त्रोच्चारण सहित सभी उपस्थित महानुभावों ने आहुति डालकर विश्व शान्ति के लिए प्रार्थना की एवं स्वामी जी के प्रेरणादायक जीवन का स्मरण किया।

द्वितीय सत्र में भजन गायन एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। जिसमें विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों ने भाग लेकर बड़े उत्साह से स्वामी जी के जीवन,

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 11 मार्च 2018 से 17 मार्च 2018

तैंतीस वीर्य

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

इदं वर्चो अग्निना दत्तमागन्, भर्गो यशः ओजो वयो बलम्।
त्रयस्त्रिंशद् यानि च वीर्याणि, तान्यग्निः प्रददातु मे।।

अथर्व 19.37.1

ऋषिः **अथर्वा**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

●(**अग्निना**) अग्नि–स्वरूप परमेश्वर से (**दत्तं**) दिया हुआ (**इदं**) यह (**वर्चः**) ब्रह्मवर्चस, (**भर्गः**) तप (**यशः**) यश, (**सहः**) साहस, (**ओजः**) ओज, (**वयः**) आयुष्य [और] (**बलं**) बल (**आगन्**) [मुझे] प्राप्त हो। (**यानि च**) और जो (**त्रयस्त्रिंशत्**) तेंतीस (**वीर्याणि**) वीर्य [हैं], (**तानि**) उन्हें (**अग्निः**) परमेश्वर (**मे**) मुझे (**प्रददातु**) प्रदान करे।

● परमेश्वर सर्वशक्तिमान् हैं, सब गुणों के आगार हैं। इधर मैं अत्यन्त अल्पशक्ति हूँ और अनेक न्यूनताएँ एवं अभाव मेरे अन्दर विद्यमान हैं। पर मैं इनसे निराश नहीं हूँ। परमेश्वर से सम्बन्ध जोड़कर मैं भी शक्तियों और गुणों का पुंज बन सकता है। मेरी कामना है कि मैं वर्चस्वी प्रभु से ब्रह्मवर्चस प्राप्त करूँ, ब्रह्मतेज से देदीप्यमान बन जाऊँ, जिससे कोई भी ब्रह्म–विरोधी भावनाएँ मुझे पराजित न कर सकें। मैं तपस्वी प्रभु से तपस्या की शिक्षा लूँ, इतना तप करूँ कि मेरे तप से समस्त पाप–वासनाएँ भस्म हो जाएँ। मैं यशस्वी प्रभु को यशः प्राप्ति के लिए अपना आदर्श बनाऊँ। उसके समान मैं भी अनुपम कीर्ति से जगमगाऊँ। मैं साहसी प्रभु से साहस प्राप्त करूँ। साहस ही मनुष्य को जटिल से जटिल कठिनाइयों से पार लगाता है। मैं ओजस्वी प्रभु से ओज ग्रहण करूँ, क्योंकि ओज ही शरीर एवं आत्मा का धन है। मैं आयुष्मान् प्रभु से दीर्घ आयुष्य प्राप्त करूँ, जिससे चिरकाल तक समाज की सेवा कर सकूँ। मैं बलवान प्रभु से शिक्षा लेकर अपने अन्दर मनोबल और दैहिक बल का संचय करूँ, जिससे मानसिक एवं बाह्य शत्रुओं से लोहा ले सकूँ।

ज्योतिर्मय परमात्मा मुझे वे तेंतीस वीर्य प्रदान करें जो मानव की पूर्णता के लिए आवश्यक हैं। ये तेंतीस वीर्य हैं दस इन्द्रिय–बल, चार अहंकार–चतुष्टय के बल, एक आत्मा का बल, पांच प्राणबल, पांच अन्नमयादि कोषों के बल, आठ अणिमादि योगसिद्धियों के बल। मानव–शरीर के अन्दर स्थित ये इन्द्रियादि यदि बलवांन् नहीं होते, तो ये मनुष्य को पथभ्रष्ट करने में कारण बनते हैं। निर्बल इन्द्रियाँ अन्तर्मुखता को छोड़कर भोग–विषयों की ओर आकृष्ट होने लगती है। निर्बल आत्मा कामादि रिपुओं के वशीभूत हो जाना है। निर्बल प्राणपान आदि अपनी प्राणन आदि क्रियाओं को साधु प्रकार से न कर सकने के कारण शरीर को रूग्ण एवं क्षीण कर देते हैं। निर्बल अन्नमयादि कोष आत्मोन्नति के सोपान न बनकर आत्मा को गिरानेवाले बन जाते हैं। निर्बल अणिमालघिमा आदि योगसिद्धियाँ परमात्म–साक्षात्कार में सहायक न होकर मनुष्य को सांसारिकता में ही फँसाये रखती हैं। अतः तेज और बल के परम स्रोत अग्नि प्रभु से मैं अपनी सम्पूर्ण विनम्रता के साथ याचना करता हूं कि वे मुझे उक्त तेंतीस प्रकार के बलों से बनाकर पूर्णता प्रदान करें।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

बोध कथाएँ

● महात्मा आनन्द स्वामी

"सदा प्रसन्न रहो!" इस विषय पर कथा सुनाते हुए स्वामी जी ने कहा कि वेद कहता है–सदा प्रसन्न रहो! जो प्रसन्न नहीं रहता उसे गृहस्थ–आश्रम में प्रविष्ट होने का, उसमें रहने को कोई अधिकार नहीं। "चिन्ता छोड़ो, प्रसन्न रहो!" पर कथा सुनाते हुए कहा चिंता से आपत्तियाँ बढ़ती हैं। अतः सर्वदा मुस्कराते रहो। "निष्काम सेवा" पर कथा सुनाते हुए कहा कि निष्काम सेवा की भावना! ऐसी भावना जिस व्यक्ति के मन में होगी, वहाँ चित्त का मैल रहेगा कहाँ? निष्काम सेवा से मन में जो प्रसन्नता होती है, उसे वही लोग समझते हैं, जो ऐसी सेवा करते हैं।

–आगे पढ़ेंगे तीन लघु कथाएँ

आत्मिक संसार की कहानी

हमारे टैगोर जी थे न! महाकवि श्री रविन्द्रनाथ ठाकुर, जिनका लिखा हुआ 'जन गण मन' हमारे देश का राष्ट्रीय गीत बन गया है और जिन्हें साहित्य के लिए संसार का सबसे बड़ा पुरस्कार 'नोबेल प्राइज' मिला था, एक बार लाहौर आये तो मैं उन्हें मिला। कितनी सुन्दर, शांत मूर्ति थी उनकी! बिल्कुल एक ऋषि–से प्रतीत होते थे वे। लाहौर में लाला धनीराम भल्ला के यहाँ वे ठहरे थे।

महाकवि ने भल्ला जी की कोठी में उपनिषदों की कथा आरम्भ की। टैगोर जी अंग्रेज़ी में बोलते थे। पण्डित ऋषिराम जी हिन्दी में उसका अनुवाद करते थे। एक बार पहुँचा तो वे कर्म–सिद्धान्त को समझाने के लिए अपनी एक कविता कह रहे थे। कविता बँगला में थी। इसका अनुवाद वे अंग्रेज़ी में सुना रहे थे। कविता का शीर्षक था– बन्दी। यह बन्दी जेल में पड़ा है, इसके चारों ओर ऊँची–ऊँची दीवारें हैं। हाथों में हथकड़ियाँ, पावों में बेड़ियाँ। दीवार में एक छोटी–सी खिड़की है, जिस पर लोहे की मोटी–मोटी सलाखें लगी हैं। कैदी बाहरवालों को देख सकते हैं, अन्दर जाने का मार्ग नहीं।

कवि इस बन्दी के पास पहुँचता है। पूछता है– "बन्दी! तुझे किसने कैद किया है? किसने ये दीवारें खड़ी की हैं? किसने ये जंजीरें बनवाई हैं? किसने इन जंजीरों से तुझे जकड़ दिया है?

और बन्दी सिर झुकाकार कहता है– "मैंने स्वयं ही अपने–आपको कैद किया है। मैंने स्वयं ही इन दीवारों का निर्माण किया है। मैंने स्वयं ही इन जंजीरों को बनाया है। स्वयं ही अपने को इनमें जकड़ लिया है, परन्तु अब स्वयं विवश हो गया हूँ।"

यह है आत्मिक संसार की कहानी! यह ठीक है कि तुम विवश हो गए हो, परन्तु किसी दूसरे ने तुम्हें विवश नहीं किया। किसी दूसरे ने तुम्हारे लिए जेल नहीं बनाई। इस जाल ने तुमको नहीं पकड़ रखा, तुमने इस जाल को पकड़ रखा है।

यह है मोह का जाल जिसमें तुमने स्वयं को जकड़ रखा है। इस जाल से बाहर आये बिना मानसिक तप तुमसे होगा नहीं। कल्याण का मार्ग तुम्हें मिलेगा नहीं।

मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना

कुछ वर्ष पहले बम्बई के सम्बन्ध में गुजरात और महाराष्ट्र वालों में जो झगड़ा हुआ, उसे कौन भूल सकता है? उन दिनों ऑस्ट्रेलिया का एक परिवार बम्बई के एक होटल में ठहरा था। नीचे सड़क पर छुरे चल रहे थे। लाठियाँ चल रही थीं। एक–दूसरे का सिर फोड़ा जा रहा था। झगड़ा हो रहा था। ऑस्ट्रेलियन परिवार के एक युवक ने यह सब–कुछ देखा तो अपने पिता से पूछा– "ये लोग परस्पर क्यों लड़ रहे हैं?

पिता ने उत्तर दिया– "पुत्र! ये मनुष्य नहीं। इनमें कुछ मराठी हैं, कुछ गुजराती हैं। इनमें मनुष्य कोई नहीं। यदि मनुष्य होते तो एक ही देश के निवासी होकर आपस में लड़ते क्यों?"

यह अद्भुत दृश्य यह देश में है। कहीं धर्म का झगड़ा है, कहीं भाषा का कहीं प्रदेश का झगड़ा है, कहीं जाति का; कहीं राजनीति का झगड़ा है, कहीं अर्थनीति का। झगड़े के कई आधार उत्पन्न कर रखे हैं हमने, और भुला दिया है इस बात को कि मिलाप का भी एक आधार है– यह पृथिवी, जिस पर हम रहते हैं।

हम दूसरों को अच्छा बनाना चाहते हैं, स्वयं अच्छे बनना नहीं चाहते। दूसरों को मनुष्य देखना चाहते हैं, स्वयं मनुष्य बनना नहीं चाहते।

हिन्दू है कोई, मुसलमाँ कोई।
मैं पूछता हूँ तुममें है इनसाँ कोई?

'वली' देखने को भी इन्साँ नहीं है!

एक था फ़कीर। दिन के समय हाथों में दो मशालें लेकर बाज़ार में चला जाता था। एक–एक दुकान के सामने ठहरता। ठहरने के पश्चात् चल पड़ता।

एक व्यक्ति ने पूछा– "बाबा! तुम यह दिन

शेष पृष्ठ 06 पर ☞

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

● भद्रसेन

लेख का प्रसिद्ध शीर्षक आर्यसमाज का लक्ष्य, उद्देश्य, कर्त्तव्य बोधक वचन है। यह कब, किसने प्रचारित किया? यह एक अनुसन्धान के योग्य तत्व है। हाँ जिसने जब भी यह साधा, वह प्रशंसनीय प्रयास था।

प्रकरणगत विचार – पूरा मंत्र इस प्रकार है :

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्नन्तो अराव्णः।। ऋ. 9.63.5।।

श्री वी. उपेन्द्र राव जी भोपाल, ने ''आर्य कौन?'' शीर्ष से एक पुस्तक प्रचारित की है। जिसमें वेदों में आए [51] आर्य शब्दों का उद्धरण सहित विवेचन किया गया है, कि यह आर्य शब्द किन–किन अर्थों में आया है। ग्रंथ में दर्शाया गया है कि आर्य शब्दयुक्त मंत्र अधिकतर वृष्टिविज्ञान विषयक हैं। अतः **''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्''** मेघ का वाचक है और गतिशील अर्थ में है। उनकी दृष्टि से मंत्र का अन्वयार्थ ''(**अप्तुरः**)'' शीघ्रगामी (**बभ्रवः**) भूरे वर्ण के (**आशवः**) किरणें (**अराव्णः**) अदानशीलों को (**अपघ्नतः**) दूर भगाते हुए (**विश्वम्**) सब को (**आर्यम्**) गतिशील (**कृण्वन्तः**) करते हुए (एव) (**इन्द्रम**) इन्द्र को (**वर्धन्तः**, बढ़ाते हुए (इन्द्र को, (**अभि**) लक्ष्य करके (**अर्षन्ति**) प्राप्त हो रहा है।

व्याख्या – मंत्र में दर्शाया गया है कि सूर्य किरणें क्या करती हैं। कैसी दिखाई पड़ती हैं? मंत्र में क्रियापद नहीं है। अतः सूक्त के छठे (6) मंत्र से अभ्यर्षन्ति का अध्याहार (=ऊपर से ग्रहण) होगा। मंत्र में प्रतीयमान कर्तृपद वस्तुतः सामान्य विशेषण है। अतः उस को स्पष्ट करने के लिए 4 मंत्र से बभ्रवः, आशवः शब्द लिए जायेंगे। वेद में सूक्त का देवता पवमान सोम है और सोम का इन्द्र से सम्बन्ध प्रसिद्ध है।

सूक्ति सन्दर्भ – मेरा विचार है कि सभी भाषाओं के साहित्य में प्रकरण से वियुक्त करके सूक्तियों का ग्रहण किया जाता है। ये सूक्तियाँ शिक्षा, प्रेरणा की दृष्टि से विशेष महत्व रखती हैं। इनमें पद्य के पूर्ण अर्ध या पाद अंश को भी स्थान दिया जाता है। उसमें भी उपमा, उदाहरण, दृष्टान्त भावना भरे वचन विशेष पसंद किये जाते हैं। प्रगति सुधार, विचारशीला चाहने वाले ऐसे अभीष्ट वचनों को सदा से प्रयोग करते रहे हैं। इसीलिए सूक्ति साहित्य भी सभी भाषाओं में प्रारंभ से ही प्रचलित रहा है।

आर्य समाज एक विचारों का प्रचारक संगठन है। अतः वह मानव समाज को स्वस्थ, समुन्नत बनाने के लिए प्रेरणा, प्रोत्साहन, शिक्षादायक वचनों को विशेष प्रचारित करता है। इस अभीष्ट वचन का उपस्थित प्रकरण में मंत्रगत प्रसंग के अनुरूप यह भाव होगा, कि जैसे वर्षा, किरणें सर्वत्र हरा–भरापन लाकर सुख फैलाती हैं। ऐसे ही मानव समाज को समृद्ध, सुखी बनाने के लिए हमें इन तीन कर्त्तव्यों को करना चाहिए।

कर्त्तव्य बोध – भारतीय परम्परा में वेदों को ईश्वरीय ज्ञान के रूप में प्रतिष्ठा दी गई है जो कि जीवन को सुन्दरता से जीने के लिए प्रभु–प्रदत्त सन्देश, उपदेश, आदेश है। ऐसी आज्ञा सदा कर्त्तव्य बोधक रूप में निर्दिष्ट होती है। अतएव वेदों में स्तुति प्रार्थना उपासना शैली के साथ कर्त्तव्य बोधक हजारों कर्मों, बातों का प्रतिपादन भी है।

प्रस्तुत वेदमन्त्र के तीन चरणों में पूर्वकालिक कृदन्ती क्रिया के रूप में तीन कर्त्तव्यों को करते हुए आगे बढ़ने, जीवन जीने का सन्देश है। वेद मंत्र में आदिष्ट ऐसे कर्त्तव्य केवल मनुष्यों पर ही चरितार्थ होते हैं। वैसे भी ज्ञानरूपी वेद का सम्बन्ध मानवों से ही संगत होता है। ईश्वरीय ज्ञान का कर्त्तव्य निर्देश के रूप में होना एक स्वाभाविक बात है।

चर्चित मंत्र के तीनों कर्तव्यात्मक सन्देश मनुष्यों से सम्बद्ध हैं। अतः आर्यसमाज ने मानव समाज के अभीष्ट को सिद्ध करने के लिए इस मंत्र को और विशेषतः **''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्''** को संगठन का लक्ष्य बनाया है। आर्यसमाज अपने नाम के अनुरुप आर्यता (=अच्छेपन) के प्रचार–प्रसार का कर्त्तव्य सामने रखकर प्रयासरत है। संस्कृत भाषा के सभी कोश आर्य शब्द का अर्थ श्रेष्ठ=अच्छा भला ही स्वीकार करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति सदा, सर्वत्र अपनी भलाई ही चाहता है।

इस दृष्टि से मंत्र का शब्दार्थ–

अप्तुरः = अपने कार्य को न टालने वाले **इन्द्रम्** = इन्द्र को **वर्धन्तः** बढ़ाते हुए **विश्वम्** = सभी को **आर्यम्** = आर्य **कृण्वन्तः** = करते हुए **अराव्णः** = दान न देने की भावना वालों को **अपघ्नन्तः** दूर हटाते हुए जीते हैं। इस मंत्र में कोई मुख्य क्रिया–पद नहीं है।

'एकतिङ् वाक्यम्' अर्थात् शब्द शास्त्र के अनुसार (कम से कम) एक क्रियापद से ही वाक्य पूर्ण होता है। अतः अगले मंत्र से यहाँ **अभ्यर्षन्ति** को लिया जा सकता है। जिस का अर्थ है=आगे बढ़ते हैं, इस प्रकार जीवन जीते हैं।

भावार्थ– जैसे किरणें इन्द्र (= सूर्य सम्बद्ध प्रकाश) को फैलाती हुई इससे सभी को क्रियाशील करती हुई और न देने की भावना वाले अन्धकार को दूर भगाती हुई आगे बढ़ती हैं। ऐसे ही सभी अच्छाई चाहने वाले इन्द्र (= धन–सम्पति जन जैसे) भौतिक और अभौतिक (विद्या–यश–धर्म–दया–स्नेह सदृश) ऐश्वर्य को बढ़ाते हुए सभी को श्रेष्ठ बनाते हुए इसमें बाधक बनने वाली अराव्णः (= सद्भाव– सहानुभूति–सहयोग न देने की भावना रुपी। असामाजिकता को दूर करते हुए जीवन जीते हैं।

व्याख्या – इन्द्र शब्द इदि धातु से बनता है जो ऐश्वर्य अर्थ में है। इदि–इन्द+र= वाला) ही राजा होता है। अतः राजा अर्थ में विशेष प्रसिद्ध है। जैसे कि देवेन्द्र=देव+इन्द्र (=देवों का राजा) खगेन्द्र–खग (=पक्षी)+ इन्द्र, गजेन्द्र गज (=हाथी + इन्द्र)

इन्द्र शब्द वेदों में अनेकत्र स्पष्ट रूप से ईश्वर वाचक भी आया है। तभी तो सृष्टि रचना आदि इन्द्र द्वारा दर्शाये हैं। जैसे कि ऋग्वेद के 2,12, सूक्त में स जनास इन्द्रः की टेक है। इसके 2 और 6 मन्त्र में जगत् रचना का चित्रण है। इन्द्र सूर्यवाचक भी बहुत है। निरुक्त ने इन्द्र को अन्तरिक्षस्थ देवता प्रतिपादित किया है। वृष्टि उसका विशेष कर्म है। इस दृष्टि से–

शं नो वातः पवता७शं नस्तपतु सूर्यः।
शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभिवर्षतु।।
यजु. 36, 10

यहाँ वायु–सूर्य–पर्जन्य वर्षा से विशेषतः सम्बद्ध माने हैं।

इन्द्र जीव अर्थ में भी आया है। तभी तो इन्द्र का साधन रूप आँख आदि इन्द्रिय कहलाते हैं। इस प्रकार इन्द्र शब्द वेदों में अनेकों का वाचक है।

अप्तुरः अप (=कर्म), तुर–त्वर (=गति), कर्मशील

आर्य–शब्द ऋ धातु से बनता है जो कि गति अर्थ में है।

गतेस्त्रयो ऽर्थाः–ज्ञानं गमनं प्राप्तिश्च

''व्यावहारिक रूप से प्रथम किसी का ज्ञान, पुनः ज्ञान के अनुरूप क्रिया अर्थात् सिद्धि की प्रक्रिया का अनुष्ठान, तब फल की प्राप्ति। अतः (अर्य) आर्य क्रियाशील अर्थ में है। गतिशील ही सत्यक्रिया से श्रेष्ठ बनता है। अन्यथा ''खाली मन शैतान का घर'' प्रसिद्ध है। अर्य का तद्धित रूप आर्य है। **''अर्यस्वामिवैश्ययोः''** पा. 3,1,103 अर्य शब्द स्वामी, वैश्य अर्थ में है। वैश्य वर्ण जहाँ व्यापार, उद्योग चलाने वाले के रूप में प्रसिद्ध है, वहाँ स्वामी=किसी का मालिक, जो अपना नियन्ता=दिशादाता आप हो, जिस में दास भाव न हो अर्थात् आत्मविश्वासी हो। तभी तो निरुक्त ने कहा है–**आर्य ईश्वर पुत्रः** (6,2,6) अर्थात् जगत् स्रष्टा के नियंत्रण, नियम मानने, पालने वाला है। इसी सब के आधार पर सभी कोशों में और साहित्य में आर्य शब्द श्रेष्ठ, पूज्य अर्थ में है।

अराव्णः–न+राव्णः–अराव्णः= अदानशील, दान न देने की भावना वाला। रा धातु दान अर्थ में है उस का विपरीत अराव्णः है। अर्थात् जिस में सद्भाव, सहानुभूति सहयोग देने की भावना नहीं है। दानशीलता=परस्पर सहयोग करना मनुष्य की पहचान है। बृहदारण्यक उपनिषद्(5,2,2–4) में एक आख्यान आता है जिसमें प्रजापति ने देव–मनुष्य–असुर तीनों को **द–द** की ही शिक्षा दी है। यहाँ सामाजिकता के कारण मनुष्यों का **द** के द्वारा दान से सम्बन्ध दर्शाया है। सामाजिकता–परस्पर के सर्वविध सहयोग से ही समृद्ध होती है, और जीवित रहती है। सामाजिक भावना से भरा व्यक्ति हर स्थिति में दूसरों से सहयोग करता है ''किसी के काम जो आए उसे इन्सान कहते हैं।'' सहयोग भावना से भरे व्यक्ति में स्वाभाविक रूप में धर्म के धृति, क्षमा, सयंम, सत्य, आदि गुण होते हैं, आ जाते हैं। सामाजिक भावना के बिना व्यक्ति स्वार्थी हो जाता है। तभी वह सभी तरह के अपराध करता है। स्वार्थ से आपाधापी बढ़ती है। जो कि बुराईयों की जड़ है।

मंत्र का सन्देश है कि

1. ईश्वर को मानकर ईश्वर में विश्वास को पक्का करके अर्थात् ईश्वरीय व्यवस्था में रहते हुए भौतिक–अभौतिक ऐश्वर्यों को बढ़ाओ।
2. अपने साथ सभी को अच्छा बनाओ।
3. इसमें बाधक बनने वाली असामाजिकता को हटाते हुए जीवन में आगे से आगे बढ़ो, सदा सर्वत्र सफलता प्राप्त करो।

182–शालीमार नगर, होशियारपुर
चलभाष : 94640 64398

वेद की कथा विचित्र

जो है आँख वाला वही तो कविराज है

● देव नारायण भारद्वाज

आँख वाला कौन नहीं, मानव तो मानव, पशुओ के भी आँखें होती हैं, पर हमने सभी को कवि होते नहीं देखा है। आँखें होना और बात है, पर देखना और बात है। बादशाह अकबर ने एक बार बीरबल से पूछा–बताओ संसार में आँख वाले अधिक हैं या अन्धे। बीरबल ने बादशाह से कहा–इस प्रश्न का उत्तर मैं तीसरे दिन आपको, नगर के मुख्य चौक पर लिखित रूप में प्रदान करूँगा; आप वहीं पधारने का कष्ट करें; अपने सर्वेक्षण की आख्या आपको दिखा दूँगा। बीरबल ने चौक पर बैठकर मूँज की रस्सी बटना आरम्भ कर दिया। साथ में आँकड़े लिखने के लिए एक लिपिक भी बैठा लिया। लिपिक के हाथ में एक बहीखाता व कलम पकड़ा दी। उसने दो खाने खींच दिये। एक में लिखना है देखने वाले और दूसरे में न देखने वाले अर्थात् अन्धे। बीरबल के पास जो भी आये वह अभिवादन के बाद उनसे यही प्रश्न करे कि "श्रीमान आप क्या कर रहें हैं, कोई विरला ही निकले जो उनसे रस्सी बटने की बात कहे। इस प्रकार देखते हुए भी न देखने वालों की संख्या बहुत बढ़ती जा रही थी, तीसरे दिन बादशाह अकबर भी आये, और उन्होंने भी उनसे वही प्रश्न कर दिया–बीरबल! क्या कर रहे हो? बीरबल ने बादशाह का नाम भी न देखने वाले खाने में लिखा दिया; और.काम बन्द कर दिया। बहीखाता जब बादशाह के सामने रखा गया, तो पता चला कि वास्तविकता को देखने वालों की संख्या अति न्यून और सभी कुछ देखते हुए, आँखों वाले अन्धों की संख्या अत्यधिक है। इस आख्यान को तो आप हास्य प्रसंग समझ कर छोड़ सकते हैं; पर ऐसा ही संकेत करने वाले वेद मन्त्र पर आपका ध्यान खींचकर लेख के शीर्षक तक पहुँचना ही पड़ेगा।

स्त्रियः सतीस्ताँ उमे पुंस आहुः
पश्यदक्षन्वान्न विचेतदन्धः।
कविर्यः पुत्रः स ईमा चिकेत यस्ता
विजानात्स पितुष्पिता सत्।।

(अथर्व. 9.9.15)

मन्त्र के शब्दार्थ एवं पुस्तकीय भावार्थ को यहाँ अंकित करके पाठकों का समय नहीं लेना चाहता, वे चाहेंगे तो वेद में देख लेंगे, मैं यहाँ सीधे मन्त्र के निहितार्थ को ही सामने रखना चाहता हूँ। मन्त्र का अत्यन्त मोहक सार सन्देश है– परमेश प्रभु द्वारा प्रदत्त मानवीय शरीर रूपी शिविर में वास करने वाली जीवात्मा स्त्रियों से घिरी है। यह स्त्रियाँ सती हैं। शक्तिशालिनी, विद्या व उत्तम शिक्षादि शुभ गुणधारिणी हैं। इन स्त्रियों के सर्व सौन्दर्य के भीतर पोषणकारी पुसंत्व या पुरुषत्व विराजमान है। जो मनुष्य इनके पुरुषत्व को न समझते हुए, केवल इनको स्त्रियाँ ही मानता है–वह अन्धा है। उसके पास आँखें हैं तो क्या लाभ; उसे जो देखना चाहिए वह नहीं देख पाता, तो वह अन्धा ही है। संसार में प्रायः सभी आँखों वालो ही होते हैं, पर वे लक्ष्य को देख नहीं पाते हैं, इसलिए अन्धे ही रह जाते हैं। विश्व स्तर पर आयोजित होने वाले एक ओलम्पिक स्पर्धा में बहुतेरे निशानेबाज गए। उनके पास आँखें थीं और लक्ष्य भी था; पर सब अपनी गर्दन झुका कर लौट आए। जिसने अपनी आँख से निशाना साध कर लक्ष्य को भेद दिया–वह निकला भारत का कुमार अभिनव। इसी प्रकार शरीर–शिविर में रह रही स्त्रियों के पौरुष को जो देख कर मानव–जीवन लक्ष्य को भेद लेता है, मन्त्रानुसार वही बन जाता है–क्रान्तिदर्शी कवि या कविराज। विश्व विजयी अभिनव स्वर्णपदक से अलंकृत होता है, वैसे ही यह कवि भी स्वर्ण पद का अधिकारी बन जाता है। क्षेत्र कोई भी क्यों न हो, क्रान्तिधर्मी सर्वोत्कृष्ट लक्ष्य लब्धकर्ता पुत्र के समान सभी के लिए आह्लादकारी बन जाता है। नगर के, जनपद के, प्रदेश के, देश के सभी नागरिक कह उठते हैं–यह विजय वरणकर्ता बालक हमारा है, प्यारा है राज दुलारा है। वह सभी के हृदयों को प्रेम, पवित्रता व प्रोत्साहन देने वाला पुत्र तुल्य बन जाता है। अभी तक उसके जन्म दाता पिता को कौन जानता था! ऐसे प्रिय पुत्र के साथ साथ अब सभी उसके पिता को जानने–समझने ही नहीं, अपितु पूजन भी लगते। जिस पुत्र की प्रपत्रों में पहिचान आत्मज पिता के रूप में होती थी, वह भी प्रपत्रों में दबी रहती थी, अब तो सभी कहने लगे–यह तो अमुक कवि–वीर बालक के पिताश्री है। मन्त्र के अनुसार ऐसे ही क्रान्ति दृष्टा कविपुत्र अपने पिता के भी पिता होने की प्रतिष्ठा पा जाते हैं।

एक राष्ट्र स्तरीय समारोह में जब एक साहित्यकार का परिचय देते हुए कहा गया–यह हमारे स्वनामधन्य महान साहित्यकार के पुत्र हैं। उस साहित्यकार ने अपने परिचय के उत्तर में जो वक्तव्य दिया, उसमें कहा कि मेरा परिचय मेरे पिता के नाम से दिया गया, पर मेरी उत्कट अभिलाषा है कि मैं ऐसा कुछ कर सकूँ कि लोग कह उठें कि यह अमुक महान साहित्यकार हैं जिनके पिता इस नाम के महान साहित्यकार थे। जो पुत्र अपनी शुभ गुणसम्पदा के द्वारा अपने पिता के नाम को गौरवान्वित करता है–वेद उसे पिता के पिता होने की प्रतिष्ठा प्रदान करता है। आर्यावर्त भारत का स्वर्णिम इतिहास ऐसे महिमा मण्डित पुत्रों से देदीप्यमान है; जिन्होंने इस मन्त्र के कथन को अपने जीवन में सार्थक करके दिखा दिया। एक मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ही क्या, इतने पुत्र यहाँ मिल जायेंगे, जिनके नामोल्लेख मात्र से ही पृष्ठानुपृष्ठ भर जायेंगे।

इस मन्त्र को थोड़ा और गहराई से देखने पर पता चलता है कि मानव शरीर का शिविर जिन स्त्रियों से घिरा हुआ है, वे है मानव की ज्ञानेन्द्रियाँ। स्त्री क्यों? क्योंकि यह कोमल, सुन्दर व आकर्षक होती हैं, इनके ही सौम्य आकार प्रकार से, मानव चाहे स्त्री हो या पुरुष, उसके रूप सौन्दर्य में निखार आता है। ये शब्द करती है जिनसे व्यक्तित्व बोलता दिखाई देता है। पाणिनि के अनुसार ये फैलती हैं और लज्जा से सिकुड़ती भी हैं। हिन्दी में इन्द्रियाँ शब्द स्वयं में स्त्रीलिंग है, देह नर हो या नारी, इस पुर में बसने वाली नपुंसक आत्मा 'इन्द्र' नामा पुल्लिंग ही कही जाती है। हिन्दी उच्चारण में कर्ण को छोड़कर शेष चारों ज्ञानेन्द्रियाँ स्त्रीरूप में सम्बोधित होती है यथा वाणी, नासिका, आँखें, व त्वचा। इनके रूपाकर्षण को हम कुछ इस प्रकार अच्छे लगने वाले प्रिय पावन प्रतीकों के तुल्य देखने में सुखानुभूति करते हैं–वाणी–कोकिल बैनी, नाक–सुआसी, आँखें,–मृगनयनी एवं त्वचा–चन्द्र वदनी। रही बात कर्ण की, तो जब इसका स्त्रीलिंग रूपान्तरण करते हैं तो बनता है–शब्द कर्णिका, जिसके दो अर्थ होते हैं "कान का आभूषण", और "हाथ की बीच की अँगुली"। हम (**भद्रं कर्णेभिः..........देवहितं यदायुः**।। यजु. 25.21.11) के अनुसार कल्याण–कार्य ही करें।

स्त्री का पर्यायवाची शब्द योषा व योषित है, जिसका अर्थ है युक्त करना, अथवा जोड़ना। स्त्री के संयोजन से ही नवसृजन संभव होता है। वेद ने तो इसकी महत्ता **'स्त्रीः हि ब्रह्माबभूविथ'** (ऋ. 8.33.19) कहकर नारी को निर्माण की अधिष्ठात्री बताया ही है, गोस्वामी तुलसीदास तक ने यही अनुभव करते हुए चौपायी लिख दी है– **"उमा दास जो सित की नाई। सबहि नचाबत राम गुसाईं।।"** वेद ने जहाँ स्त्री को रचयिता ब्रह्मा कहा है, उसी मन्त्र में यह भी स्पष्ट कर दिया है कि रचनायें खुलेआम नहीं गोपन विधि से अनुशासन, संयम एवं मर्यादा में रह कर की जाती है। रसना का विषय रस, नाक का विषय गन्ध, आँख का रूप, कान का शब्द और त्वचा का स्पर्श है। दार्शनिक ग्रन्थों में इन विषयों के लोभी क्रमशः मीन, भौंरा, पतंगा, हिरण और हाथी को बताया गया है जो इन विषयों के बन्धन में आकर अपने प्राण गँवा बैठते हैं। इन प्राणियों में तो एक ही विषय दोष उनके विनाश का कारण बनता है और मनुष्य में तो यह सभी विषय होते है, इसलिए उसका बच पाना तो बहुत कठिन है।

आज विकास के युग में प्राणियों की यह उपमायें फीकी पड़ गयी हैं, क्योंकि मनुष्यों में दुर्व्यसनों के दुर्दान्त दृश्य सहज सुलभ दिखाई देते हैं। दैनिक हिन्दुस्तान दि. 4 मार्च 2009 में प्रकाशित समाचार के अनुसार एक किशोरी के सामूहिक बलात्कार में सम्मिलित दो भाइयों को आजीवन कारावास व अर्थ दण्ड दिया गया। इस घृणित दुष्कर्म में अपने पुत्रों के सहायक पिता को दस वर्ष कैद के साथ अर्थ दण्ड भी दिया गया। अतरौली थाने में एक दस वर्षीय बालक के विरुद्ध अपनी छह वर्षीय चचेरी बहन को बहला–फुसलाकर ले जाने व दुष्कर्म के प्रयास का मुकद्दमा दर्ज किया गया। कहाँ तक लिखें, चाहे धर्मचेता महात्मा हों, चाहे शासनकर्ता नेता हों, शिक्षक, वैज्ञानिक व्यापारी, अभियन्ता या चिकित्सक कोई भी क्यों न हों, सभी क्षेत्रों में यह अनाचार, अत्याचार व भ्रष्टाचार कूट कूट कर भरा दिखाई देता है।

इस सर्व प्रकारेण संतापकारी दुःख–दावानल से बचने का उपाय खोजने के लिए और कहीं नहीं जाना है। वह तो इसी मन्त्र में समाहित है। बस, इतना करना है। इन इन्द्रियों के प्रति अपना दृष्टिकोण सुधार कर स्वस्थ करना है। इन सती स्त्री स्वरूपा–इन्द्रियों में छिपी पुंसत्व–पोषण पूर्ण पुरुषत्व की शक्ति को समझकर, अपने जीवन के सकारात्मक

शेष पृष्ठ 06 पर ☞

गतांक से आगे

अष्टाचक्र – नवद्वारा

● श्रीमती मनीषा विमल

5. विशुद्ध चक्र– जिस स्थान पर गले में दोनों ओर की हड्डियां आकर मिलती हैं उसी स्थान पर अंगूठे के बराबर खाली स्थान पर कण्ठमूल में विशुद्ध चक्र स्थित होता है। इस पर नियंत्रण से मनुष्य का मन निर्मल होता है तथा सकारात्मक सोच बनती है। कोई भी कार्य उत्साहपूर्वक लगन व श्रद्धा के साथ करता है। वाणी पर संयम तथा भूख प्यास पर नियंत्रण होता है।

इसी के पास *थाइराइड* व पैराथाइराइड नाम की दो ग्रन्थी होती है, इन ग्रंथियों का कार्य मनुष्य के यौवन को सुरक्षित रखना होता है। इसके हारमोन्स के अधिक या कम स्राव से मनुष्य के शारीरिक विकास में बाधा आती है। या तो अधिक मोटापा आ जायेगा या शरीर अत्यधिक दुबला रहेगा, इन ग्रन्थियों का मुख्य कार्य वसा, कार्बोहाइड्रेट, प्रोट्रीन का उचित उपयोग कर सारे शरीर का संरक्षण करना होता है। इसीलिये इसमें विकृति, आने पर मनुष्य की जीवनी शक्ति अस्त व्यस्त हो जाती है। मनुष्य की भूख राक्षसी वृत्ति की अर्थात् अत्यधिक हो जाती है, या बिल्कुल नहीं लगती।

प्राणायाम द्वारा विशुद्ध चक्र को जागृत किया जाता है जिसका प्रभाव इन ग्रन्थियों पर भी पड़ता है इससे इन्हें भी ऊर्जा मिलती है।

6. **जीवन चक्र–** इसका स्थान नासिका मूल में होता है। इस पर संयम करने से दीर्घ जीवन, शारीरिक सुडोलता तथा ओजस्विता आती है, इसीलिये शायद बाबा रामदेव अनुलोम विलोम प्राणायाम पर बहुत ज़ोर देते है। क्योंकि यह प्राणायाम सबसे सरल है तथा जीवन चक्र को क्रियाशील बनाता है। कहते हैं कि जब साधक अपनी जिह्वा को अन्दर मोड़ कर तालु से लगा कर ओ३म् का जाप करता है तब सुषुम्ना नाड़ी पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। भूख प्यास पर नियंत्रण हो जाता है तथा श्वास प्रश्वास की गति भी ठीक रहती है जिससे शरीर को आक्सीजन की मात्रा ठीक प्रकार मिलती रहती है। शरीर स्वस्थ रहता है।

7. **आज्ञा चक्र–** यह शरीर का सबसे महत्वपूर्ण चक्र है जिसके द्वारा ध्यान एकाग्र किया जाता है। इसी स्थान पर मातायें बिन्दी लगाती हैं तथा पुरुषों को टीका लगाया जाता है। जो व्यक्ति सम्मोहन विद्या का प्रयोग कर वशीकरण कहते हैं वह मनुष्य के इसी स्थान को प्रभावित करते हैं। इसी स्थान पर योगियों को ध्यान केन्द्रित करना होता है।

इसी चक्र के ठीक पीछे मस्तिष्क में *पीनियल* व *पिटटयूटरी* ग्रन्थी स्थित है। जब आज्ञाचक्र पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है तब इसका प्रभाव इन ग्रन्थियों पर भी पड़ता है। जिसके कारण मानसिक अशांति उद्विग्नता जैसे भाव नियंत्रित होते हैं। इसीलिये कहा जाता है कि प्रत्येक मनुष्यों को कम से कम दस मिनट ध्यान अवश्य करना चाहिये जिससे मानसिक व शारीरिक उन्नति हो सके। इन ग्रन्थियों का स्थान सहस्राधार चक्र के पास ही होता है अर्थात् आज्ञा के पीछे तथा सहस्राधार चक्र के ज़रा सा नीचे।

सहस्राधार चक्र– इसे ब्रह्मचक्र भी कहते हैं, मस्तिष्क में तालु के ठीक ऊपर इसका स्थान बताया जाता है, यह चक्र क्योंकि शरीर में सबसे ऊपर तथा मस्तिष्क में स्थित है इसलिये इसे क्राऊन चक्र ब्रह्म चक्र भी कहते हैं।

मस्तिष्क में स्थित *पिनियल ग्लैन्ड* व *पिट्टूटरी ग्लैन्ड* को ब्रह्मग्रन्थी व रुद्रग्रन्थी भी कहते हैं। *पिनियल ग्लैन्ड* का मस्तिष्क में वही स्थान है जहाँ ब्रह्मचक्र बताया जाता है, कहा जाता है ब्रह्मचक्र या सहस्राधार चक्र के जागरण से मनुष्य में ऋतम्भरा बुद्धि, विवेक शीलता, अद्भुत विचारशीलता कार्यशक्ति तथा अनोखी सूझबूझ आ जाती है, इसी तरह ब्रह्मग्रन्थी व रुद्र ग्रन्थियों पर नियंत्रण होता है। मस्तिष्क में जितनी भी कोशिकायें होती हैं जो लाखों की संख्या में हैं,– समस्त विचारों व क्रियाओं का आवागमन करती हैं उन पर भी इसी ग्रन्थी का नियत्रंण होता है इसीलिये इसे मास्टर ग्लैण्ड या मनुष्य की तीसरी आँख कहा जाता है।

कहते हैं जब योगी साधना में विधिवत् ढंग से ओ३म् का उच्चारण पूर्ण वैज्ञानिकता के साथ करते हैं तब मस्तिष्क की इन्हीं कोशिकाओं में हलचल होती है तथा इन्हें ऊर्जा मिलती है, तथा असम्भव से असम्भव दीखने वाला कार्य भी सम्भव हो जाता है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हमें महर्षि के जीवन चरित्र के अध्ययन से स्थान स्थान पर देखने को मिलता हैं– जैसे **उन्होंने केवल तीन मास में 377 पुस्तकों का अध्ययन कर तथा 290 पुस्तकों का प्रमाण देकर सत्यार्थ प्रकाश की रचना की।**

इसी के पास दूसरी ग्रन्थी है जिसे पिप्टयूटरी कहते है जो आधा इंच गोलाई की है, स्वतन्त्र रूप से तो इसका कोई कार्य नहीं हैं किन्तु यह प्रत्येक उस ग्रन्थी की सहायता करता है जिसमें थोड़ी सी भी शिथिलता आ जाती है या विकृति आ जाती है, विशेष रूप से मूलाधार चक्र से सम्बन्धित क्रियायों तथा उपागों की क्रियाशीलता पर नियंत्रण रखना होता है। कहते हैं जब सहस्राधार चक्र जागृत हो जाता है तब पिप्टयूटरी ग्लैन्ड, व पिनियल ग्लैन्ड को भी ऊर्जा मिलती है तथा इनकी क्रियाशीलता से मानसिक शक्ति, विचार शक्ति तथा बौद्धिक विकास होता है।

इस विषय को बताने का अभिप्राय है कि हमें अपने स्थूल शरीर का आन्तरिक ज्ञान, कार्य करने की विधि, आन्तरिक अंगों पर प्रभाव आदि विषयों का ज्ञान हो सके। सामान्य ज्ञान से ज्ञात होता है कि ऊपर से दीखने वाला शरीर जितना सुन्दर दिखाई देता है इसकी आन्तरिक प्रक्रिया उतनी ही जटिल तथा स्वचालित है। जिसको प्राणायाम आदि क्रियाओं से शक्तिशाली बना सकते हैं। हमारा शरीर स्वयं में एक चिकित्सक है। चक्र व ग्रन्थियों का सम्बन्ध लगभग ऐसा ही है जैसा स्विच व बल्ब का। चक्रों द्वारा ग्रन्थियों को ऊर्जा मिलती है तथा नौ द्वार जो कहे गये हैं– दो आँख, दो कान, दो नाक, एक मुख, दो उपांग यह बाहरी ज्ञान को प्राप्त करने का साधन है, इन्हीं के द्वारा कर्म व उपासना की जाती है। इन सभी चक्रों, नौ द्वारों का मुख्य आधार प्राण है। यही चेतन शक्ति या प्राणों के शरीर से निकलते ही शरीर शव बन जाता है। इसीलिये मन्त्र में शरीर को अजेय अयोध्यापुरी कहा गया है।

इस शरीर के अन्दर एक हिरण्यकोश अर्थात् दिव्यशक्तियों का खज़ाना है जो प्रत्येक मनुष्य के अन्दर होता है। किन्तु यह दिव्य शक्तियाँ केवल उन्हीं मनुष्यों को प्राप्त होती हैं जो अपने मस्तिष्क व हृदय दोनों पालक पिताओं को अच्छी तरह समझकर इनके द्वारा दी गई प्रेरणाओं को दृढ़ संकल्प शक्ति, पुरुषार्थ, तपस्या, साधना तथा लगन द्वारा प्राप्त करते हैं। वे अपने कर्म को पूजा उपासना आराधना मान कर निष्ठापूर्वक करते हैं।

योग साधना के द्वारा ओ३म् का जाप व प्राण–साधना की जाय तो यह चक्र, ग्लैन्डस व मस्तिष्क जागृत हो जाते हैं क्योंकि ओ३म् की ध्वनि कोई सामान्य नहीं है। यही वह शब्द है जिसके द्वारा हमारा ब्रह्म से जुड़ाव होता है। स्वबोध होता है मन प्रसन्न रहता है व्यक्ति शान्त चिन्त रहता है।

जीवन में प्रगति करने की कोई अन्तिम परिणति नहीं होती, आयु की कोई सीमा नहीं होती, प्रगति करने से एक आत्मिक सन्तोष मिलता है। ऐसे व्यक्ति चिन्ताओं, आलोचनाओं, संघर्ष, विरोधाभास से परे हो जाते हैं। प्रत्यक्ष में एक दो उदाहरण हैं अहमदाबाद में आज भी 82 वर्ष की एक महिला पन्द्रह वर्षों से एक स्कूल के बाहर ट्रैफिक कन्ट्रोल का कार्य कर रही है। एक महिला ने 55 वर्ष की आयु में दो युवा बेटियों की माँ होने पर भी एशियाड में बौडीबिल्डिंग में सिल्वर पदक जीते हैं, हरियाणा की दो महिलायों ने पेसंठ वर्ष की आयु में निशानेबाजी में पदक जीते हैं। उदाहरण बहुत हैं जिन्हें हम प्रतिदिन समाचार पत्रों व टी.वी. में देखते हैं। प्राणिक हीलिंग चिकित्सा का उदाहरण आपके सामने जेल परिसर का प्रत्यक्ष ही है।

जैसे जैसे आयु बढ़ती है माना जा सकता है कि शरीर के अंगों में शिथिलता आने लगती है। क्योंकि मृत्यु तो जन्म के साथ ही शरीर में प्रवेश कर जाती है किन्तु यदि हमारा मन सशक्त हो, दृढ़ निश्चयी हो, अपने को सदैव क्रियाशील रखे, आयु को न हावी होने दे, तो किसी भी आयु में अपनी शक्ति को जागृत कर सकते हैं। इसके लिये संयमित जीवन, शुद्ध व सात्विक आहार, व्यायाम तथा स्वयं को रखें, विषम परिस्थिति भी हमें बहुत कुछ सिखाती है तथा कुछ कर गुज़रने की शक्ति देती है जीवन संघर्ष का नाम है। यह संघर्ष जीवन के हर पड़ाव में कभी भी करना पड़ सकता है, किन्तु ईश्वर पर आस्था व विश्वास रख कर कर्म करने से प्रत्येक परिस्थिति का सामना किया जा सकता है। इस मन्त्र के द्वारा बताये गये विषय को जाना जाय या समझा जाय तो। इस समय मुख्य रूप से हमारे देश के प्रधान मन्त्री माननीय मोदी जी भी एक उदाहरण हैं। और भी उदाहरण हैं किन्तु विषय बहुत विस्तृत हो जायेगा। अतः मेरा इस मन्त्र के द्वारा थोड़ी सी स्थूल शरीर की कार्य प्रणाली को थोड़ा समझाकर अपनी योग्यता को जानने परखने पर विचार करने से है। हम अयोग्य, असहाय, अक्षम, अस्वस्थ नहीं है।

2/25 आर्य वानप्रस्थ आश्रम
ज्वालापुर (हरिद्वार)
मो. 9760618162

गतांक से आगे

महर्षि दयानन्द सरस्वती का योगदान

● ओम् प्रकाश यादव

आज सारा धार्मिक जगत् ऋषिवर का लोहा मानता है। यह सब कुछ सत्यार्थप्रकाशरूपी दिव्यास्त्र की अक्षुण्णता के कारण ही है। इससे क्षतविक्षत हुए बहुत से नररूप पामर ऋषि को तर्बरा (कटुवचन) सुनाने में ही अपने जीवन को सार्थक समझते हैं, पर हमें उन पर क्रोध न कर दया ही दिखानी चाहिए। किसी के मन को दुखाना, किसी की हानि करना, किसी का विरोध करना या किसी पर मिथ्यारोप लगाना उन्हें अभीष्ट न था। इसी ऋषिवर के उद्‌गार पढ़िए:–

'वैदिक एकेश्वरवाद का सूर्य अस्त हो चुका था। **'न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्यच्यते। न पंचमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते। न अष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते। य एवं वेद देव में कवृतं।** वेद का वैदिक नाद लगाने वाले आर्यों का सर्वथा जगती से ह्रास हो चुका था। (+ अथर्ववेद 13+4+16+18। देखिए इसका अर्थ वह परमात्मा न ही द्वितीय, न ही तृतीय न ही चतुर्थ, न ही पंचम, न ही षष्ठ, न ही सप्तम, न ही अष्टम, न ही नवम, न ही दशम कहा जाता है। जो इस देव को एक मानता है, उसको वह प्राप्त होता है। अर्थात् वह अकेला ही वर्तमान है।

'ऐसे विकट समय में संसार को पुनः सत्य (सच्चे ईश्वर का पाठ स्वरूप) पढ़ाने वाले (दरशाने) का महर्षि दयानन्द ने अपने गुरु दण्डी स्वामी विरजानन्द जी के आदेश से अकेले ही बीड़ा उठाया। इस मुहिम से सत्यार्थप्रकाश का प्रणयन स्वामीजी महाराज का पहला कदम है। ऋषिराज की इस अद्वितीय कृति के प्रसिद्ध होते है धार्मिक जगत् में सर्वत्र खलबली मच गई। प्रथम समुल्लास परमेश्वर के सच्चे स्वरूप का उद्‌घाटन कर इस पुस्तक ने **'सर्वेषां वेदानां ब्रह्माणि तात्पर्यम्'** इस महोद्देश्य की पूर्ति के बाद में लिखे गए वेदभाष्य के प्रथम चरणरूप ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के उपोद्‌घात का काम किया।

ऋषि ने स्पष्ट लिखा है कि बात इसलिए मत मानो कि मैंने ऐसा कहा है। इसको सोचो, मनन करो, समझो और इस पर विचार करो। यदि तुम इस को सही समझते हो तो इसे मानो अन्यथा इसे मत मानो।

मैं स्वयं उनके द्वारा लिखित कई बातें नहीं मानता जैसे कि शिक्षा पद्धति क्योंकि आज यह संभव नहीं है।

वैदिक धर्म के प्रचार और मूर्तिपूजा का विरोध करने में दयानन्द अकेले थे। उनका प्रबल विरोध हुआ। कई बार उन पर घातक हमले हुए और दो बार उन्हें भोजन में विष दिया गया। काशी शास्त्रार्थ में उन पर हमले में स्वयं काशीनरेश एक भागीदार थे। अन्त में विषमिश्रित दूध से 59 वर्ष की अवस्था में उनकी मृत्यु हुई।

कोई भी व्यक्ति उन्हें शास्त्रार्थ में नहीं हरा सका। उन्होंने कहा था कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। चाहें हम इसे न मानें पर यह एक वास्तविकता है कि जो कुछ वेदों में है वह किसी भी वैज्ञानिक आविष्कार या खोज से झुठलाया नहीं गया। जबकि बाईबिल तथा कुरान में लिखी कई बातें असत्य तथा अवास्तविक सिद्ध हो चुकी हैं। यह भी कहा जाता है कि ईसा सूली पर नहीं मरे। उन्होंने बौद्ध धर्म पढ़ा तथा अहिंसा का उपदेश दिया। यह माना जाता है कि उनकी कब्र कश्मीर में श्रीनगर से कुछ दूर पर है। मूर्तिपूजा के विरोधी इस्लाम में काबा में शिवलिङ्ग है। यह एक मुसलमान विद्वान का कथन है।

क्योंकि मूर्तिपूजा वेदविरुद्ध है अतः दयानन्द ने इसका विरोध तथा खंडन किया। यदि उनकी दो शिक्षाएँ न मानी जाएँ अर्थात शिक्षा पद्धति तथा विवाह की आयु, उनके अन्य चौदह विचार सर्वमान्य हैं तथा यही बातें उन्हें महान् धार्मिक तथा समाजसुधारक घोषित करने के लिए पर्याप्त हैं।

ओ३म् शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!! ओ३म्! ओ३म्!

विजय कुंज, 165 पी.डी.ए. कॉलोनी
परवरी गोवा–403521–
मो. 09423885322

☞ *पृष्ठ 02 का शेष*

बोध कथाएँ...

के समय मशालें लेकर क्या देखते–फिरते हो? क्या ढूँढते हो?

फ़कीर ने कहा– "बच्चा! मैं मनुष्य खोज रहा हूँ।"

उस व्यक्ति ने आश्चर्य से कहा– "इतनी भीड़ में इतने लोगों में तुम्हें कोई मनुष्य नहीं मिला?"

फ़कीर बोला– "नहीं बच्चे! मुझे कोई नहीं मिला।"

पूछनेवालों ने कहा– "तुम मनुष्य किसे कहते हो?"

फ़कीर ने उत्तर दिया– "जिससे काम की वासना और क्रोध की आग नहीं, जो इन्द्रियों का दास नहीं और क्रोध के वश में होकर अपने लिए और दूसरों के लिए आग की लपटें उभारने का यत्न नहीं करता, उसको मैं मनुष्य कहता हूँ।"

भरी मदरसों से गो यह सरज़मी है।
'वली' देखने को भी इनसाँ नहीं है!

हमारा विचित्र रोग

एक मनोरंजक घटना याद आई। कुछ वर्ष पूर्व की बात है। पंजाब में एक मन्त्री थे। उनकी दो स्त्रियाँ थीं। पंजाब–असेम्बली की एक देवी ने उन पर आक्षेप किया कि वे भारतीय मर्यादा के विरुद्ध कर रहे हैं। भगवान् राम का नाम भी लेते हैं और एक–एक घर में दो–दो स्त्रियाँ भी बिठाते हैं, जबकि भगवान् राम ने सीताजी के वनवास के समय भी दूसरा विवाह नहीं किया था।

ये मंत्री महोदय थे बहुत प्रत्युत्पन्न–मति (हाज़िरजवाब)। जल्दी से बोले– "आप राम का नाम लेती हो। उनके पिता का नाम भी तो लो! उनके यहाँ तीन पत्नियाँ थीं। मेरे यहाँ तो केवल दो हैं।

यह है हमारा–आपका रोग! हम यह तो चाहते हैं कि दूसरे लोग राम बनें, परन्तु स्वयं दशरथ बनना चाहते हैं। वह भी पत्नियों के विषय में, और विषयों में नहीं।

क्रमशः

☞ *पृष्ठ 02 का शेष*

जो है आँख वाला वही...

निर्माण कार्यों में प्रयोग करना है। गोदुग्ध पान करने वाली रसना, मदिरा के कड़वे स्वाद को ठुकरा दे। माखन–मिश्री–केशर की सुगन्धि लेने वाली नासिका के आगे जब मांस–मछली की दुर्गन्ध आए तो वह उसे ठुकरा दे। माता–बहिन–बेटी के रूप में दिखाई देने वाली नारियाँ के प्रति यदि आँख में काम–वासना जगने लगे तो वे बन्द हो जायें, कानो में प्रभु भक्ति, देशभक्ति व समाज सुधार के स्वर न आकर अश्लील कामुकता के फिल्मी गाने समाने लगें, तो वे सुनना बन्द कर दें। गुरु–विद्वान–माता–पिता के चरण स्पर्श करने वाले हाथ यदि काली कमाई या पर स्त्री की कलाई पकड़ने लग जायें तो थम जायें और मानव इन पतनकारी दुरित पथ पर जाने से रुक जायें। जब अनियन्त्रित खुला छोड़ देते है तो यह बिगडैल इन्द्रियां मानव को गर्त में गिरा देती हैं। जो व्यक्ति इन इन्द्रियों की स्त्री व पुमान् अर्थात् भोग व पोष उभयशक्ति को जानता व व्यवहार करता है वही कवियों का कविराज बन जाता है। नर हो या नारी सभी कल्याणकारी शिव का अर्द्धनारीश्वर रूप धारण कर लेते हैं। इन साधारण दो आँखों से तो सब देखते हैं, पर अन्तर्निहित इस छिपे तीसरे नेत्र से देखने वाला–फिर चाहे उसके यह ऊपरी नेत्र न भी हों, अन्तः नेत्र से देखने वाला प्रज्ञाचक्षु सूरदास जेसा महाकवि बनता है, जिसे कवियों में भी महाकवि–सूर को सूरज की उपाधि दी जाती है। ऐसे ही नेत्रहीन गुरु विरजानन्द दण्डी को प्रज्ञाचक्षु कहते है, व्याकरण का सूर्य कहते हैं, जिन्होंने सन्यासी दयानन्द सरस्वती को न केवल पहिचाना, अपितु शिक्षा प्रदान कर, गुरुदक्षिणा में वेद और मानवता के उद्धार के लिए दयानन्द का जीवन ही मांग लिया था। दयानन्द ने भी "पितुष्पिता"–पिता के पवित्र कीर्ति कर्ता पिता बनकर और गुरु की चिर प्रतीक्षित अभिलाषा को पूर्ण करके अपने गुरु वर को भी अमर–प्रकाशित कर दिया। यही तो आर्य महाकवि प्रकाशजी ने देखा–समझा और यों कह दिया–

आनन्द स्रोत बह रहा पर तू उदास है,
अचरज है जल में रहकर मछली को प्यास है।
आनन्द मोक्ष का ना पासकेगा तब तलक
जब तलक तू
प्रकाश' इन्द्रियों का दास है।।

"वेद की यह भाव–गरिमा शासक वर्ग द्वारा प्राथमिक शिक्षा के नैतिक पाठयक्रम में जोड़कर बच्चों को सच्चरित्र सृष्टा बनाया जा सकता है।

वरेण्यम्, अवन्तिका (प्र.)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ.प्र.)

वेदों में राष्ट्रीय योग क्षेम की अवधारणा

● राम निवास 'गुणग्राहक'

सबसे पहले तो हमें वेदों के बारे में जान लेना चाहिए कि वेद परमात्मा द्वारा दिया गया इस सृष्टि का अटल–अपरिवर्तनीय संविधान है। लगभग एक अरब छिआनवे करोड़ से अधिक वर्ष पहले जब परमात्मा ने यह सृष्टि बनाई, तब मानव की पहली पीढ़ी के चार पुण्यात्मा ऋषि–अग्नि, वायु, आदित्य और अङ्गिरा के हृदय में क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का ज्ञान दिया। विषय की दृष्टि से देखें तो ऋग्वेद ज्ञान काण्ड है, यजुर्वेद कर्म काण्ड है सामवेद उपासना काण्ड है और अथर्ववेद विज्ञान काण्ड। इस प्रकार मानव के जीवन में काम आने वाली सभी विद्याएँ परमात्मा ने वेदों के रूप में हमें सृष्टि के प्रारम्भ में ही प्रदान कर दीं। महर्षि मनु से लेकर महर्षि दयानन्द सरस्वती तक सब ऋषि मुनियों ने एक स्वर में कहा है कि **"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है"**। कुछ विज्ञानवादी लोग डार्विन के विकास वाद को मानते हुए मनुष्य को बन्दरों का संशोधित रूप मानते हैं, सम्भवतः वे नहीं जानते कि विकासवाद की कल्पना को ता डार्विन के सहयोगी रहे डॉ. रसेल वालेस और चार्ल्स डार्विन के पुत्र जार्ज डार्विन ही अस्वीकार कर चुके थे। परमात्मा की सृष्टि रचना में कहीं का सुधार संशोधन नहीं हो सकता, परमात्मा ने ऐसे ही बनाये थे। मनुष्य भी धरती पर मनुष्य के रूप में ही उत्पन्न हुआ था। जैसे एक देश को चलाने के लिए, एक व्यापारिक कम्पनी को चलाने के लिए नियमों–कानूनों व सिद्धान्तों की आवश्यकता होती है और उन्हीं नियमों सिद्धान्तों के अनुसार देश व व्यापार का संचालन होता है! ठीक उसी प्रकार से उस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का निर्माण व संचालन होता है! ठीक उसी प्रकार से इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का निर्माण व संचालन भी किन्हीं नियमों व सिद्धान्तों के अनुसार हुआ है व हो रहा है। उन नियमों–सिद्धान्तों का जितना ज्ञान–विज्ञान मानव के लिए आवश्यक है, उतना परमात्मा ने वेदों के रूप में सृष्टि के प्रारम्भ में ही दे दिया था। वह ज्ञान गुरु–शिष्य परम्परा से आज भी हमें मिलता है, आज भी कोई विद्या विज्ञान का प्रेमी पुरुष वेदों को पढ़कर स्वयं निर्णय कर सकता है कि वेदों में सम्पूर्ण ज्ञान–विज्ञान है।

वेद पूर्णतः विज्ञान सम्मत हैं तर्क और बुद्धि संगत हैं, मानवीय हैं, न्याय की हर कसौटी पर खरे हैं। मानव के उपयोग की सभी विद्याएँ जैसे गणित, भूगोल, चिकित्सा, कृषि, व्यापार, राजनीति, कला कौशल, भवन निर्माण और शिक्षा नीति से लेकर विमान–विद्या जैसे तकनीकी ज्ञान–विज्ञान के विविध विषय वेदों में बिखरे पड़े हैं। सब विद्याओं व समस्त ज्ञान विज्ञान के स्त्रोत वेद राष्ट्र के योगक्षेम के सम्बन्ध में क्या कहते हैं, यह जानना निश्चित रूप से हम सबके लिए बहुत उपयोगी रहेगा।

आज हमारा देश एक विचित्र संकमण काल से जूझ रहा है। साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार और राजनैतिक गिरावट अपने निचले स्तर तक पहुँच गए हैं। उन सबका दुष्परिणाम यह है कि मानव की पतनगामी प्रवृतियाँ मानव के मन–मस्तिष्क को, मानव के विवेक को इतना निर्बल बना चुकी हैं कि सिर उठाकर सत्य को स्वीकारने का साहस मानव नहीं दिखा रहा। ऐसे में परमपिता परमात्मा का पुण्यप्रद ज्ञान हमें एक नई दिशा दिखाकर, एक नया प्रकाश देकर बचा सकता है।

यजुर्वेद के बाहसवें अध्याय का बाईसवाँ मंत्र वैदिक साहित्य में राष्ट्रीय प्रार्थना के रूप में प्रसिद्ध है। इस मंत्र में देश की सुख सुविधा और समृद्धि से लेकर देश के स्वाभिमान तक को बनाये रखने और बढ़ाने के लिए जिन महत्त्वपूर्ण घटकों की आवश्यकता होती है, उन सबकी प्रार्थना देखने को मिलती है। मंत्र बडा सरल है, सबकी समझ में आने वाला है। मंत्र इस प्रकार है;–

''ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणों ब्रह्मवर्चसी जायताम् आ राष्ट्रे राजन्यः शूट इषव्योऽतिव्याधी जायतां। दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषाजिष्णु रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां। निकामे–निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।"

इस मंत्र में सबसे पहले ऐसे ब्राह्मण की प्रार्थना की है जो ब्रह्मतेज से युक्त होकर शासक का मार्गदर्शन कर सके। भारत की प्राचीन राजनीति में राजा के निकट एक ऐसा तेजस्वी, विद्वान, धर्मात्मा, त्यागी–तेजस्वी ब्राह्मण या संन्यासी रहता था, जिसके मार्गदर्शन में राजा राजकार्य करता था। ऐसे राजनीति के पण्डित निर्लोभी–निर्मोही ब्राह्मण की हर बात को मानने के और न मानने के अच्छे बुरे परिणामों पर बडे तर्कपूर्ण ढंग से प्रकाश डाला गया है। आचार्य चाणक्य और नन्दवंश का पतन इसकी व्यावहारिक पुष्टि करता हैं।

दूसरी प्रार्थना बाणविद्या अर्थात् युद्धकला में निपुण, देश के आन्तरिक व बाहरी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाली सेना के नायक महारथी, निर्भय राजा के लिए है। **'राजा रञ्जयति प्रजाः'** के अनुसार राजा का मुख्य काम प्रजा का पालन व रक्षण करना है, लेकिन युद्धविद्या और दुष्टों का दमन करने में सक्षम राजा ही प्रजा पालन सम्बधी कर्त्तव्यों का निर्वाह कर सकेगा।

दूध देने वाली गायें और ढोने में समर्थ बैल भी किसी सुखी–समृद्ध राष्ट्र की बहुत बड़ी आवश्यकताएँ है। रामायण से लेकर महाभारत काल तक गाय और बैल इस देश की संस्कृति व समृद्धि के मूल–आधार माने जाते थे। आज दुर्भाग्य से भारत में गाय–बैलों की स्थिति चिन्तनीय है, महाभारत के विराट् पर्व में महाराज युधिष्ठिर की गायों के सम्बन्ध में लिखा है–**'तस्य अष्टशत साहस्रा गवां वर्गाः शतं शतम्''** राजा युधिष्ठिर के यहाँ सौ–सौ गायों के गयारह लाख वर्ग थे। 'अपरे शत साहस्रा द्विस्तावन्तः तथा ऽपरे' इनके अतिरिक्त चार लाख वर्ग और थे! राजा विराट् से अपनी गाय–बैल सम्बन्धी योग्यता बताते हुए सहदेव कहता है।–

ऋषभांश्चापि जानामि राजन् पूजित लक्षणान्।
येषां मूत्रं उपाघाय अपि बन्ध्या प्रसूयते।।

हे राजन्। मैं उत्तम लक्षणों वाले ऐसे बैलों के बारे में भी जानता हूँ, जिनके मूत्र के सूघने मात्र से बन्ध्या (स्त्री) भी पुत्र जनने में समर्थ हो जाती है गाय के दूध, गोबर व मूत्र के औषधीय गुणों के प्रति आज कुछ जागरूकता दिख रही है, ये हमारे सौभाग्य की सूचक है। **'गोषु मात्रा न विद्यते'** अर्थात् गााय के उपकार असीम है इसीलिए वेद–**'गावो विश्वस्य मातरः'** की घोषणा करते हैं कि गाय विश्व की माता है। गाय और बैल के साथ तेज गति से दौडने वाले घोड़ों की प्रार्थना की है। उत्तम वस्त्र के सुशिक्षित घोड़ों की उपयोगिता तो सदा सर्वदा बनी रहती है।

अगली प्रार्थना घर–परिवार के समस्त व्यवहारों को भली भाँति चलाने वाली तथा वीर प्रसूता मातृशक्ति के लिए है। राष्ट्र के निर्माण में माता की भूमिका कितनी बड़ी है, इसे समझना होगा। **माता निर्माता भवति**–अर्थात् माँ अपनी सन्तति के जीवन का निर्माण करने वाली है। वेद विद्या के पुनरोध्दारक महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखते है जितना माता सन्तानों पर प्रेम, उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता। ''देश की भावी पीढ़ी का निर्माण माँ के गर्भ और गोदी में होता है। आज विज्ञान ने सिद्ध कर दिया है कि बचपन की शिक्षा बचपन तक काम आती है। इसीलिए–**'गुरुणां माता गरीयसी'** कहकर माँ को सर्वश्रेष्ठ गुरु स्वीकार किया गया है।

शत्रुओं को जीतने में समर्थ और सभाओं में राष्ट्राहित को सर्वोपरि रखने वाले युवकों की प्रार्थना तो सबकी समझ में सरलता से आने वाली है। देश और दुनियाँ का इतिहास लिखने का सौभाग्य सदैव युवा पीढी को ही मिलता रहा है। युवा शब्द किसी आयु विशेष के लिए प्रयोग में नहीं आता, युवा का शाब्दिक अर्थ है–जोड़ तोड़ की क्षमता वाला, विचार और व्यवहार की दृष्टि से सत्य को स्वीकार करने और असत्य को त्यागने की आन्तरिक शक्ति जिसमें है, वह बड़ी आयु का व्यक्ति भी युवा ही माना जाता है। देश के विकास और उत्थान के लिए ऐसी क्षमता वाले के सम्बन्ध में महर्षि मनु लिखते हैं–

'सभां वा न प्रवेष्टव्या, वक्तव्यं वा समञ्जसम्।
अब्रुवन् विब्रुवन वापि नरो भवति कित्त्विषी।।

अर्थात् या तो सभा में जाये ही नहीं, जाए तो सदैव सत्य–न्याय की ही बात करे। सभा में सत्य न कहने वाला और सत्य–न्याय के विपरीत बोलने वाला, दोनों महामारी होते हैं। जहाँ राष्ट्रहित से जुड़ी समस्याओं व सम्भावनाओं पर विचार विमर्श चल रहा हो, वहाँ असत्य और अन्याय का पक्ष लेना या मौन रहना राष्ट्रद्रोह जैसा ही अपराध माना जाता है। इसीलिए कहा जाता है–**''वदतो ब्रह्म अवदतो वनीयान्''** सच बोलने वाला न बोलने वाले से अच्छा माना जाता है।

राष्ट्र की सुख समृद्धि के लिए ही नहीं राष्ट्र की शोभा और सुन्दरता के लिए समय समय पर वर्षा का होना बहुत ही आवश्यक है। मंत्र में प्रार्थना है कि जब हम कामना करें, जब हमें आवश्यकता हो, तब तब वर्षा हो। बड़ा प्रश्न यह है कि क्या ऐसा सम्भव है। श्री कृष्ण गीता में स्वष्ट शब्दों में कहते हैं–**'यज्ञात् भवति पर्जन्यो'**– यज्ञ से वर्षा होती है। वेद मंत्रों के द्वारा विधि पूर्वक यज्ञ किया जाए तो वर्षा का होना एक विज्ञान सम्मत प्रक्रिया हैं। औषधि वनस्पतियाँ उत्तम फल वाली होकर पके हुए, मीठे फलों से युक्त हों। राष्ट्र का प्राकृतिक सौन्दर्य, वृक्ष वनस्पतियों का फूलना फलना समय समय पर वर्षा का होना राष्ट्रीय जन जीवन को परिपूर्ण और रसीला बना देता है। इन सब प्रार्थनाओं के अन्त में कहा है– **'योगक्षेमो नः कल्पताम्**– अर्थात् इन सबकी सम्यक् प्राप्ति हमारे राष्ट्रीय योगक्षेम की देने वाली हो। अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति को योग कहा जाता है तथा प्राप्त वस्तु का सदुपयोग व संवर्धन करना क्षेम कहलाता है।

आचार्य कौटिल्य का प्रसिद्ध वाक्य है–**सर्वे धर्माः राज धर्माणि प्रविश्यन्ते**– अर्थात् सारे धर्म राजधर्म में समाहित हो जाते हैं। राजा अगर धर्मात्मा, त्यागी–तपस्वी, पवित्रात्मा, ब्राह्मण वा संन्यासी के कुशल मार्ग दर्शन में राज व्यवस्था चलाता है, उसके पास युद्धविद्या में निपुण, शत्रुओं जीतने वाले महारथी सैनिक हैं, निर्भीक होकर सभा–संसदों में प्रजाहित में सत्य–न्याय के लिए बोलने वाले मंत्री हो। प्रचुर मात्रा में दूध देने वाली गायें और भार ढोने में समर्थ बैलों के साथ तेज गति से चलने वाले सुशिक्षित घोड़े भी हों। घर परिवार के सब कार्य व्यवहारों को भली भाति करने वाली नारियां हो, राष्ट्र की युवा पीढी सभ्य हों। यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म करने वाली संस्कारवान युवक–युवतियाँ किसी राष्ट्र की सबसे बडी सम्पत्ति एवं सुरक्षित भविष्य की आशा जगाने वाले होते हैं। शास्त्रविधि से यज्ञ करते हुए समय समय पर वर्षा की प्राप्ति के द्वारा हम अपने वृक्ष–वनस्पति व औषधियों को फूलों फलों से युक्त बनाये रखकर अपने राष्ट्र के सम्पूर्ण योगक्षेम को सुरक्षित रखें। इस एक मंत्र में राष्ट्रीय सुख समृद्धि का बड़ा रोचक और प्रेरक चित्रण देखने को मिलता है। हम सब मिलकर अपने देश भारत के लिए परमपिता परमात्मा से सदा ऐसी ही प्रार्थना करते रहें।

मो0 7597894991

भारतवर्ष के उत्थान में महर्षि दयानन्द का योगदान

● कृष्ण चन्द्र गर्ग

जब महर्षि दयानन्द आए तब हिन्दू जाति मृतप्रायः हो चुकी थी जैसे उसकी रीढ़ की हड्डी ही न हो। मुसलमानों और ईसाइयों के तर्कों का हिन्दू उत्तर न दे पाते थे। वे धड़ाधड़ मुसलमान और ईसाई बनते जा रहे थे। महर्षि दयानन्द ने हिन्दुओं के साथ-साथ इस्लाम और ईसाइयत की कमज़ोरियों का पर्दाफाश किया। हिन्दुओं को उनके वास्तविक वैदिक धर्म से परिचित कराया। हिन्दुओं में आत्म गौरव और आत्म सम्मान भरा। हिन्दू अब मुसलमान और ईसाई बनने बन्द हुए। उल्टा मुसलमान और ईसाई बने हिन्दुओं को वापिस वैदिक धर्म में आने के लिए प्रेरित किया गया। हिन्दुओं को घटने की बजाए बढ़ने की प्रेरणा दी। जो बाद में स्वामी श्रद्धानन्द के शुद्धि अन्दोलन के रूप में सामने आया।

भारत के गवर्नर जनरल रहे श्री सी. राजगोपालाचार्य ने कहा था-"Dayanand came when there was chronic danger of Islam on one side and of Christianity on the other. He saved Hinduism from all dangers fighting against them boldly" – [दयानन्द ऐसे समय में आए जब एक तरफ इस्लाम का और दूसरी तरफ ईसाइयत का बड़ा ख़तरा था। उन्होंने उनसे बहादुरी से लड़कर हिन्दुओं को सब खतरों से बचाया।]

वेद – महर्षि दयानन्द जब आए तब वेद लुप्त प्रायः हो चुके थे। पण्डित लोग कहते थे कि वेदों को तो शंखासुर ले गया है। महर्षि दयानन्द ने उन्हें पुनः उपस्थित किया। उव्वट, सायण, महीधर आदि आचार्यों ने वेदों के अर्थों का अनर्थ कर दिया था। उन्हें देखकर जर्मनी के संस्कृत के विद्वान मैक्समूलर ने सन् 1870 में वेदों को गडरियों के गीत, बच्चों की बिलबिलाहट, जादू टोने आदि की पुस्तकें बताया था। महर्षि दयानन्द ने वेदों का यथार्थ भाष्य किया और उन्हें सब सत्य विद्याओं की पुस्तक बताया। महर्षि दयानन्द ने बताया कि वेद ईश्वर का दिया ज्ञान है जो अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा – इन चार ऋषियों के मनों में ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में दिया। यह सभी मनुष्यों के लिए मानवता का ज्ञान और विधान है।

महर्षि का वेद भाष्य पढ़ने के बाद सन 1882 में मैक्समूलर ने कैम्बरिज विश्वविद्यालय, इंग्लैण्ड में ICS के विद्यार्थियों को भारत के सम्बन्ध में सात भाषण दिए थे। वे सातों भाषण "India, what can it teach us" नामक पुस्तक में प्रकाशित हुए थे। तीसरे भाषण में मैक्समूलर ने कहा था – " I maintain that for a study of man there is nothing in the world equal in importance with the Vedas." – [मैं मानता हूँ कि मानवता के अध्ययन के लिए वेदों के समान महत्त्वपूर्ण संसार में और कुछ भी नहीं है।]

UNESCO ने ऋग्वेद को धरोहर (Heritage) स्वीकार किया है।

श्री अरविन्द घोष ने इसी सम्बन्ध में लिखा है – "There is nothing fantastic in Dayanand's idea that Vedas contain truth of science as well as truth of religion. I will add my own conviction that Vedas contain the other truth of science that the modern science does not at all possess" – [दयानन्द का विचार कि वेदों में विज्ञान और अध्यात्म दोनों विद्यमान हैं अजीब नहीं है। मैं तो यह भी मानता हूँ कि वेदों में वह विज्ञान भी है जो आज के वैज्ञानिक नहीं जानते।]

हिन्दी भाषा – हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनवाने का श्रेय महर्षि दयानन्द को है। अब से लगभग 145 वर्ष पूर्व सबसे पहले महर्षि दयानन्द ने हिन्दी को देश की भाषा के रूप में पहचाना था। वे स्वयं गुजराती थे और संस्कृत के विद्वान थे। पर उन्होंने अपना सारा लेखन और भाषण हिन्दी में किया। उनका दृढ़ मत था कि देश की एकता के लिए सारे देश की एक भाषा हो और वह भाषा देवनागरी लिपि में हिन्दी ही हो सकती है। हिन्दी को वे 'आर्य भाषा' के नाम से पुकारते थे।

बाद में मुंशी प्रेमचन्द ने भी अपना साहित्य हिन्दी में देकर हिन्दी के उत्थान में बड़ा योगदान किया।

गान्धी जी ने देवनागरी और उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जाने वाली हिन्दी-उर्दू मिश्रित भाषा को देश की भाषा बनाने की वकालत की थी और उस खिचड़ी भाषा का नाम हिन्दोस्तानी रखा था।

परन्तु भारत के संविधान निर्माताओं ने 14 सितम्बर 1949 को 12 के मुकाबले 312 के भारी बहुमत से देवनागरी लिपि में हिन्दी को देश की राजभाषा के तौर पर स्वीकार किया था। हिन्दी भाषा के विस्तार के लिए आवश्यकता पड़ने पर शब्द लेने के लिए हमारे संविधान में विशेष तौर पर संस्कृत भाषा को नामित किया गया है।

स्वतन्त्रता आन्दोलन – महर्षि दयानन्द ने अपनी लेखनी और भाषणों द्वारा हिन्दुओं में स्वाधीनता की भावना भरी जिसके परिणाम स्वरूप आर्यों ने स्वाधीनता संग्राम में बढ़चढ़ कर भाग लिया। **अदीना स्याम् शरदः शतम्** – अर्थात् हम स्वतन्त्र रहते हुए सौ वर्ष तक जीएँ – का वैदिक चिन्तन महर्षि ने हमें दिया। कांग्रेस अध्यक्ष पट्टाभिसीता रमैया ने अपनी पुस्तक 'स्वतन्त्रता का इतिहास' में लिखा है कि स्वतन्त्रता आन्दोलन में 85 प्रतिशत आर्य थे। बाकी 15 प्रतिशत में सनातनी, जैनी, सिख, मुसलमान, ईसाई सभी आ जाते हैं। उन्होंने महर्षि दयानन्द को राष्ट्र पितामह बताया था जबकि गांधी जी को राष्ट्रपिता। जो-जो कार्य गांधी जी ने अपनाए वे सब उससे पचास साल पहले महर्षि दयानन्द ने आरम्भ किए थे – उदाहरण – स्वदेशी, खादी और ग्रामोद्योग, अछूत उद्धार, महिला उत्थान, गो संरक्षण आदि। महर्षि ने बीज बोया और गांधी जी ने फसल काटी।

डा. एनी बीसैंट एक अंग्रेज औरत थी जिसने भारत की स्वतन्त्रता के लिए काम किया। उसने कहा था – "When the Swaraj Temple is built there will be images of the leaders of the freedom movement and that of Swami Dayanand will be the tallest." – [जब स्वराज का मन्दिर बनेगा, उसमें स्वतन्त्रता आन्दोलन के नेताओं के चित्र (बुत) लगेंगे तब उनमें स्वामी दयानन्द का चित्र (बुत) सबसे बड़ा होगा।]

मोती लाल नेहरु ने जेलों में घूमने के बाद गान्धी जी को जो रिपोर्ट दी थी उसमें कहा गया था कि जेलों में 80 प्रतिशत आर्य समाज के लोग हैं।

लाला लाजपत राय ने कहा था – आर्य समाज कट्टर राष्ट्रीयता में विश्वास रखता है।

महर्षि दयानन्द के विचारों से प्रेरित होकर स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, पंण्डित लेखराम, पण्डित गुरुदत्त, लाला लाजपत राय, भगतसिंह के दादा अर्जुन सिंह, पिता किशन सिंह, चाचा अजीत सिंह आदि कितने सज्जन समाज और राष्ट्र की सेवा में उतरे।

स्वामी श्रद्धानन्द, जिनका नाम पहले मुंशी राम था, ईसाइयत की ओर झुक रहे थे। महर्षि दयानन्द के साथ मुलाकात के बाद पक्के आर्य और राष्ट्रभक्त बन गए। लाला लाजपत राय इस्लाम की तरफ झुके हुए थे। वे आर्यों की संगति से आर्य बने और देश की स्वतन्त्रता के लिए लड़ते हुए शहीद हुए।

मौलवी महबूब अली जिला बागपत बड़ौत के पास बरवाल में बड़ी मस्जिद के इमाम थे। महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर वे इस्लाम को छोड़कर आर्य बन गए। अब वे महेन्द्रपाल आर्य के नाम से वैदिक धर्म का प्रचार रहे हैं।

शिक्षा – महर्षि दयानन्द ने बच्चों की शिक्षा पर विशेष बल दिया था। उनके शिष्य आर्यों ने बहुत से आर्य स्कूल व कालिज स्थापित किए तथा दयानन्द ऐंग्लो वैदिक (D.A.V.) नाम से शिक्षण संस्थाओं का देश भर में जाल बिछा दिया है।

हिन्दू समाज में लड़कियों को पढ़ाना बुरा माना जाता था। महर्षि दयानन्द और आर्य समाज का ही प्रभाव है कि अब सभी हिन्दू अपनी लड़कियों को शिक्षा ही नहीं बल्कि उच्च शिक्षा दिला रहे हैं।

समाज सुधार के कानून – हिन्दू विधवा स्त्री के पुनर्विवाह के विरुद्ध थे। सन 1856 में पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की कोशिश से अंग्रेज सरकार ने विधवा

वह बता रहा है कि यह चित्र उसने क्यों लटका रखा है। "मैं उसे केवल इस कारण से अपने कमरे में लटकाए हुए हूँ कि स्वामी जी के जीवन का उच्च और पवित्र आचरण सदा मेरी आँखों के सामने रहे। जिस घड़ी सांसारिक लोगों के व्यवहार से मेरा मन ऊब जाए, जिस समय प्रलोभनों के कारण पग डगमगाएँ अथवा प्रतिशोध की भावना मेरे मन में लहरें लेने लगें अथवा जीवन की कठिन राहें मेरे साहस व धैर्य की अग्नि को मन्द करने लगें, उस विकट वेला में उस पवित्र मोहिनी मूर्त के दर्शनों से आकुल-व्याकुल ह्रदय को शान्ति मिले, दृढ़ता धीरज बने रहें, क्षमा व सहनशीलता के मार्ग पर पग चलते चले तथा मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि इस चित्र से मुझे लाभ पहुँचा है और एक बार नहीं, कई बार।"

विवाह एक्ट बना दिया जिससे विधवा स्त्री के पुनर्विवाह को मान्यता मिल गई। परन्तु पण्डितों के विरोध के चलते यह कानून व्यवहार में न आ सका। बाद में जब आर्य समाज ने इस काम को अपने हाथ में लिया तभी विधवा विवाह का प्रचलन हुआ।

छोटी उमर की लड़कियों की शादी बड़ी उमर के आदमियों के साथ कर दी जाती थी। आर्य समाज के प्रतिष्ठित नेता श्री हरविलास शारदा के प्रयास से सन 1929 में अंग्रेज़ सरकार ने इसके विरुद्ध कानून बना दिया जिसका नाम है – Child marriage restraint Act। तब उसका विरोध तिलक जैसे महानुभाव ने भी किया था। युक्ति थी ईसाई सरकार को हमारे धर्म में परिवर्तन करने का अधिकार नहीं है।

हिन्दू समाज में पति के मरने पर पत्नी को पति के साथ ही जीवित ही जला देने की कुप्रथा थी जिसे सतीप्रथा कहते हैं। राजा राजमोहन राय के प्रयत्न से अंग्रेज़ सरकार ने सन् 1828 में इसके विरुद्ध कानून बनाया। बाद में आर्य समाज ने इसे हाथ में लिया और दृढ़ता से इसका पालन किया और करवाया।

जन्म की जातपात तोड़कर विवाह को वैधता देने वाला जो कानून है वह आर्य समाज के बड़े नेता श्री घनश्याम सिंह गुप्त के प्रयास से अंग्रेज सरकार ने सन् 1937 में बनाया था। उस एक्ट का नाम Arya Marriage Validation Act है। महर्षि दयानन्द ने जन्म की जातपात और छुआछूत को पूरी तरह नकारा था।

सत्यार्थप्रकाश – महर्षि दयानन्द ने एक अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' दिया। उसमें जन्म से मृत्यु तक मनुष्य को क्या-क्या करना चाहिए और कैसे जीना चाहिए यह सब ज्ञान वेदों के अनुकूल दिया गया, संसार में व्याप्त सभी पंथों (मजहबों) के गुण-दोष बता कर सभी को सचेत किया गया, वेद के सार्वकालिक और सार्वभौमिक मानव धर्म पर प्रकाश डाला गया और ईश्वर के सच्चे स्वरूप का वर्णन किया गया। 'सत्यार्थप्रकाश' में 377 ग्रन्थों के सन्दर्भ हैं और 1542 वेद मन्त्रों और श्लोकों के उदाहरण हैं। 'सत्यार्थप्रकाश' को पढ़कर लाखों लोग पाखण्ड, अन्धविश्वास, अज्ञान से निकल कर सत्य के प्रकाश का आनन्द लेने लगे हैं।

'सत्यार्थप्रकाश' के सम्बन्ध में वीर सावरकर ने कहा था – "हिन्दुओं की ठण्डी रगों में गर्म खून का संचार करने वाला ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' अमर रहे। सत्यार्थप्रकाश की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता।"

पाखण्ड और अन्धविश्वास पर चोट – महर्षि दयानन्द और उनके शिष्य आर्यों ने मूर्तिपूजा, ग्रह, फलित-ज्योतिष, भूत-प्रेत, तागा-ताबीज, जादू-टोना आदि पाखण्ड और अन्धविश्वास पर तगड़ी चोट मारी। इन्हें अज्ञानता से पैदा हुई गलत धारणाएँ बताया। ईश्वर का सच्चा स्वरूप बताकर मूर्तिपूजा को हानिकर बताया। मनुष्य के सुख-दुख का कारण ग्रह नहीं। ग्रह तो जड़ है। वे किसी का भला या बुरा नहीं कर सकते। सुख-दुख का कारण मनुष्य के अपने अच्छे-बुरे काम हैं। उन कामों के फल स्वरूप ही मनुष्य को सुख-दुख होता है। फलित ज्योतिष (Astrology) का वेदों में या किसी भी वैदिक ग्रन्थ में कहीं कोई नामो-निशान नहीं है। ये सारी बातें साधारण लोगों को ठगने के साधन मात्र हैं। जो पहले था और अब नहीं रहा उसे भूत कहते हैं जैसे बीते समय का नाम भूतकाल है। किसी व्यक्ति के मरने पर मृतक शरीर का नाम प्रेत है। तागा-ताबीज़, जादू-टोना आदि भी धूर्तों के द्वारा पैदा किए हुए टोटके हैं।

साहित्य शोधन – आर्यों (हिन्दुओं) के साहित्य को स्वार्थी लोगों ने अपनी मनमर्जी से मिलावट करके दूषित कर दिया था। महर्षि दयानन्द और उनके शिष्य आर्यों ने उस मिलावट को अलग करके सत्य साहित्य प्रकाशित किया जिनमें वाल्मीकि रामायण, महाभारत, मनुस्मृति आदि प्रमुख हैं। महर्षि दयानन्द ने सत्य ओर असत्य ग्रन्थों की सूची हमें दी कि कौन से ग्रन्थ पढ़ने चाहिएं और कौनसे नहीं। जो ग्रन्थ सत्य वैदिक धर्म को प्रतिपादित करते हैं उन्हें पढ़ने योग्य की सूची में रखा और जो असत्य बातों से भरे हैं उन्हें न पढ़ने योग्य ग्रन्थों की सूची में रखा।

श्री कृष्ण के पवित्र और महान् जीवन चरित को कलंकित करके प्रसारित किया जाता है। महर्षि दयानन्द ने इस पर तगड़ी आपत्ति उठाई और कहा कि 'महाभारत' की पुस्तक के अनुसार श्री कृष्ण एक धर्मात्मा और परोपकारी पुरुष थे। उन्होंने जन्म से लेकर मृत्यु तक कोई भी बुरा काम नहीं किया। महाभारत में राधा नाम की किसी स्त्री का कोई ज़िकर नहीं है।

नमस्ते और गायत्री मन्त्र – महर्षि दयानन्द ने अभिवादन के लिए सार्थक शब्द 'नमस्ते' दिया। जब भी दो व्यक्ति मिलें तो आपस में नमस्ते कहें। नमस्ते शब्द है – नमः + ते अर्थात मैं आपका सम्मान करता हूँ। उसी में बड़ों के लिए आदर और छोटों के लिए प्यार की भावना छिपी है। वेदों में तथा अन्य वैदिक ग्रन्थों में अभिवादन के तौर पर 'नमस्ते' शब्द का ही प्रयोग किया गया है।

महर्षि दयानन्द ने विचारने के लिए तथा अमल करने के लिए वेद का मन्त्र 'गायत्री मन्त्र' दिया। इस मन्त्र में परमात्मा से उत्तम बुद्धि के लिए प्रार्थना की गई है। सभी मनुष्यों को उत्तम बुद्धि प्राप्त करने के लिए अच्छा सात्विक भोजन लेना चाहिए तथा बढ़िया पुस्तकों का स्वाध्याय करना चाहिए।

आज देश-विदेश में करोड़ों लोग अभिवादन के तौर पर 'नमस्ते' शब्द का प्रयोग करते हैं तथा गायत्री मन्त्र का पाठ करते हैं।

प्रसिद्ध कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने कहा था – हमारा जितना उपकार महर्षि दयानन्द ने किया है उतना और किसी ने नहीं किया।

मुंशी प्रेमचन्द की लेखनी में समाज सुधार के विषय पर महर्षि दयानन्द का प्रबल प्रभाव दिखाई देता है। उन्होंने एक कहानी लिखी है 'आपका चित्र'। कहानी के नायक ने अपने कमरे में महर्षि दयानन्द का एक चित्र लटका रखा है।

वह बता रहा है कि यह चित्र उसने क्यों लटका रखा है। "मैं उसे केवल इस कारण से अपने कमरे में लटकाए हुए हूँ कि स्वामी जी के जीवन का उच्च और पवित्र आचरण सदा मेरी आँखों के सामने रहे। जिस घड़ी सांसारिक लोगों के व्यवहार से मेरा मन ऊब जाए, जिस समय प्रलोभनों के कारण पग डगमगाएँ अथवा प्रतिशोध की भावना मेरे मन में लहरें लेने लगे अथवा जीवन की कठिन राहें मेरे साहस व धैर्य की अग्नि को मन्द करने लगें, उस विकट वेला में उस पवित्र मोहिनी मूर्त के दर्शनों से आकुल-व्याकुल हृदय को शान्ति मिले, दृढ़ता धीरज बने रहें, क्षमा व सहनशीलता के मार्ग पर पग चलते चले तथा मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि इस चित्र से मुझे लाभ पहुँचा है और एक बार नहीं, कई बार।"

831, सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा
दूरभाष : 0172-4010679

यथा शक्ति प्रयास किया किन्तु हार गया

● कपिल देवराय

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्-भद्रं तन्न आ सुव।।
यजु. 30/3

यह प्रार्थना का मंत्र है। इस मंत्र का प्रकाश ऋषि ने किया है। यह महर्षि दयानन्द जी का प्रिय मंत्र है। छन्द गायत्री है। इस मंत्र में भक्त परमात्मा से प्रार्थना करता है– "हे परमात्मा मैं अल्पज्ञ हूँ। आप सर्वज्ञ हैं। मैं चेतन हूँ, किन्तु मेरा शरीर, मन और बुद्धि प्रकृति से निर्मित है। वे सभी जड़ हैं। प्रकृति त्रिगुणात्मक है। तीनों गुण मेरे भीतर भी प्रविष्ट हैं। तम और रज के प्रभाव से मेरे भीतर अनेक विचार भर गए हैं। काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद, मत्सर और हिंसा आदि अनेक मनोभावों से मैं ग्रसित हूँ। अज्ञान और अविद्या के कारण मैं अनेक दुर्गुणों और दुर्व्यसनों का शिकार हो जाता हूँ। परिणाम स्वरूप जीवन में दुःखों और कष्टों का अम्बार है। मेरी बुद्धि पाप-पुण्य में अन्तर नहीं कर पाती। समस्याओं के झंझावात में मेरा जीवन किंकर्त्तव्यमूढ़ सा हो गया है। जीवन में व्याप्त बुराइयों को निरन्तर छोड़ने का प्रयास करता हूँ। किन्तु पूर्णरूपेण सफल नहीं हो पाता। आप सम्पूर्ण संसार के उत्पत्तिकर्त्ता और समग्र ऐश्वर्ययुक्त हैं। आप शुद्धस्वरूप और सभी प्रकार के सुखों के दाता हैं। मेरी जीवन-नौका मझधार में पड़ी है। सर्वत्र अंधेरा है। मैंने यथाशक्ति प्रयास किया किन्तु हार गया। एक बुराई छोड़ता हूँ तो दूसरी बुराई प्रवेश कर जाती है।"

परमात्मा ने कहा– " निराश न हो! ये सारी बुराइयां तेरे ही कर्मों का फल हैं। बुराइयों का स्वागत तो तुमने किया है, भोगेगा कौन? तुम मुझसे चाहता है क्या?"

भक्त ने आर्त्त स्वर में कहा– भगवन्! मैं आप का पुत्र हूँ। आप मेरे पिता, माता, बन्धु, मित्र और सखा हैं। अब आप से करबद्ध प्रार्थना है कि आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए। जो कल्याण कारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, वह सब हमको प्राप्त कराइये। आप सर्वसामर्थ्ययुक्त हैं। करुणानिधान और दयालु हैं। प्रार्थना करने का मेरा अधिकार है और प्रार्थना सुनना और उसे पूर्ण करना आप का कर्त्तव्य है।"

कोल बाज बाहदुर (कोलघाट)
आजमगढ़-276001
मो. 9452088770

पत्र/कविता

सर-गंगा राम दृढ़निश्चयी मानव थे

देहली के राजेन्द्र नगर से सर गंगाराम अस्पताल उत्तरी भारत के प्रसिद्ध अस्पतालों की श्रंखला में प्रमुख स्थान रखता है।

सर गंगाराम की जन्म कथा एक गुरूद्वारो से प्रारम्भ होती है। अमृतसर के पास शेखुपुरा गांव में एक गुरुद्वारा स्थित बताया जाता है जिसमें लाला दौलतराम को यह बालक लावारिस स्थिति में प्राप्त हुआ। गुरूद्वारे के ग्रंथी ने बालक को देखकर भविष्यवाणी की थी कि यह बालक अत्यन्त ख्याति प्राप्त करेगा। लाला दौलतराम निसंतान थे, उन्होंने बालक का नाम "गंगाराम" रखा और उसको खूब पढ़ाने का प्रयास किया। लौहार में लाला दौलत राम के कुल के पुरोहित एक इंजीनियर के कार्यालय में काम करते थे। गंगाराम पुरोहित जी के पास रहकर शिक्षा ग्रहण करता था।

एक दिवस गंगाराम पुरोहित जी के कार्यालय में गया और खेलते-खेलते कार्यालय में अफसर की कुर्सी पर बैठ गया। जब अफसर आये तो गंगाराम को कुर्सी पर बैठे देखा तो आग-बबूला हो गये। गंगाराम ने उस अफसर की डॉंट सुनकर मन ही मन निश्चय किया कि एक दिन वह इस कुर्सी पर अवश्य बैठेगा।

गंगाराम कुछ समय उपरान्त रुड़की के "टामसन" कालेज में भर्ती हो गये और इंजीनियर की परीक्षा पास कर ली। उस समय इंजीनियर की परीक्षा पास करना अत्यन्त दुर्लभ था। समय बड़ा बलवान होता है। गंगाराम को लाहौर की उसी कार्यालय में नौकरी मिल गई और उनकी प्रतिज्ञा पूरी हो गई।

गंगाराम ने अपने जीवन का उद्देश्य ईमानदारी, सच्चाई, समाजसेवा और दीनदुखियों के हितों में लगाया। ब्रिटिश सरकार ने इनकी विशिष्ट सेवा हेतु "सर" की उपाधि से सुशोभित किया।

मृत्यु उपरान्त इनकी विरासत से देहली में सर गंगाराम चिकित्सालय की स्थापना की गई जो अब उत्तरी भारत का प्रमुख अस्पताल बन गया है।

कृष्ण मोहन गोयल
113 बाजार कोट
अमोराह 244221

****

ज़बरदस्ती हिन्दू क्यों मानते हो

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कहा है कि भारत में रहने वाला हर व्यक्ति हिंदू है, वह चाहे मुसलमान ही क्यों न हो। मैं मोहन भागवत के उपरोक्त वक्तव्य से न तो सहमत हूँ और न ही होना चाहिए कि देश का प्रत्येक नागरिक हिन्दू है।

देश का प्रत्येक नागरिक भारतीय आर्य, हिन्दुस्तानी या इन्ड़ियन तो हो सकता है। भारत में जन्में किसी भी धर्म सम्प्रदाय या मत को मानने वाले ही हिन्दू हो सकते हैं क्योंकि वे सभी पुनर्जन्म को मानते हैं-शवों को जलाते हैं-गो भक्त हैं और ओंकार की भक्ति करते हैं। मुस्लिम ईसाई पारसी यहूदी विदेशी धर्मावलम्बी हैं अतः ये हिन्दू नहीं हो सकते हैं। ये स्वयं को हिन्दू नहीं मानते हैं फिर आप उन्हें जर्बदस्ती हिन्दू क्यों मानते हो?

डॉ. गिरीश चन्द्र गुप्त
5/491, लक्ष्मी नगर, बुलन्दशहर

****

रे बबुआ! अपना गाँव शहर हो गया है

नव जीवन द्वार खुला आज समर में इम्तिहान है,
पुरुषार्थ आजमाने को सब बाधक सामान है।
बाहें आजमाने का ऐसा अवसर फिर कब मिलेगा-
आज आन्धियों में देखो किस गज़ब का तूफ़ान है।।

उखड़े तो पतन, रुदन व विलाप है,
जुड़े रहें विकास और उल्लास है।
बून्द-बून्द का मिलन सागर विशाल-
एकता में बल, अलगाव विनाश है।।

मीठे झरने का पानी भी ज़हर हो गया है,
पुरवाई पर पैट्रोल का असर हो गया है।
पीपल टूटे, बरगद सभी उखड़-उखड़ गए-
रे बबुआ अपना गांव शहर हो गया है।।

कोई रूठकर तो कोई मुस्करा के गया,
यहां तो जो भी मिला दर्द बढ़ा के गया।,
जिसकी धूप अपने सीने पर सही हमने-
वक़्त पड़ा तो वह भी नज़रें बचा के गया।।

महात्मा चैतन्य स्वामी
महादेव, सुन्दरनगर (हि.प्र.)

अपने बरताव से ही सपने हों साकार

द्वेष दिल में रह गया, भरा हुआ अवसाद।
प्रेम मरहम ही तेरा, मिटा देगा विषाद।।
कमी सभी जो दूर कर, सत्य राह दिखलाय।
मंजिल तक जो ले चले, शिक्षक वह कहलाय।।
काची माटी चाक पर, पीट रहा कुम्हार।
जैसे शिक्षक शिष्य को, देता है आकार।।
माँ ने जब धारण किया, हमें मिला आकार।
गुरु धारण करके सदा, मिल जाय संस्कार।।
बच्चों को जो सीख दे, सीख वही खुद पाय।
अमल सीख पर खुद करे, जीना तुझको आय।।
गुरु जो देता ताडना, दे रहा संस्कार।
पीट पीट आकार दे, जैसे एक कुम्हार।।
धन तो उत्तम है वही, जो धरम संग आय।
शोषण कर जो भी मिला, वह विनाश ही लाय।।
दान धरम में जो लगा, धन उत्तम हो जाय।
पेटी में जो रह गया, पड़ा पड़ा सड़ जाय।।
सूरत तो किस काम की, बिन सीरत बेकार।
सीरत तेरी ही सदा, सूरत देय निखार।।
व्यापार तो बढ़ सके, अच्छा हो व्यवहार।
अपने बरताव से ही, सपने हों साकार।।

नरेन्द्र आहूजा विवेक
602, जी.एच. -53 सैक्टर
पंचकूला (हरियाणा)
मो. 09467608688

डी.ए.वी. सोलापूर में हुआ वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह

डी.ए.वी. सोलापूर में वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह का आयोजन किया गया। डी.ए.वी. गान के बाद कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्रीमान अतुल कहाते (लेखक एवं क्रिकेट स्कोअरर) के कर कमलों द्वारा हुआ। प्रिंसीपल डॉ. विजयकुमार उबाले जी ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। प्रिंसीपल डॉ. क्षीरसागर ने परिचय करवाया। प्रिंसीपल डॉ. के. किर्ती पांडे ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की 2016–17 सत्र में ए–1 ग्रेड प्राप्त करने वाले सभी छात्र–छात्राओं को पुरस्कृत किया गया।

मुख्य अतिथि श्री अतुल कहाते ने अपने संबोधन में छात्रों से कहा की स्मार्ट फोन (मोबाईल) के दुष्परिणाम से आदमी स्वयं केंद्रित (आत्मकेंद्रित) हो गया है। आदमी एक दूसरे से गहरा और प्यारा रिश्ता रखने के बजाय डिसकनेक्ट हो रहा है। व्हॉटस ॲप के उपर रिश्ता रखने से सामाजिक एवं मानवी मूल्यों का हास हो रहा है यह चिंताजनक है। कम्प्यूटर, मोबाईल व इंटरनेट के उत्पत्ति का इतिहास भी उन्होंने बताया। समारोह से पूर्व अध्यापक गण से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि बदलती दुनिया के नए आयाम को मद्देनजर रखते हुए अपनी कार्यकुशलता को बढ़ाने की जरुरत है।

श्रीमती गोदावरीबाई चुनिलाल लाहोटी ट्रस्ट एवं डी.ए.वी. सोलापुर की ओर से सभी क्षेत्र में (शिक्षा, खेल, कला, एवं नैतिक व सामाजिक मूल्य) उत्तम कार्य के लिए चार विद्यार्थियों को "दयानंद श्री" का विशेष पुरस्कार ट्रस्ट के गणमान्य पदाधिकारियों की उपस्थिति में दिया गया।

इस अवसर पर छात्र–छात्राओं ने अत्यंत उत्साहपूर्वक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत कर के अपनी छिपी हुई प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

कार्यक्रम के अंत में प्रिंसीपल डॉ. यु एम राव ने मुख्य अतिथि एवं आए हुए सभी गणमान्य व्यक्तियों का तहेदिल से शुक्रिया अदा किया। उक्त समारोह आदरणीय स्थानीय सचिव श्री महेश चोपड़ा के मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद से संपन्न हुआ।

डी.ए.वी. नारनौल ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मदिवस पर निकाली शोभा यात्रा

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल नारनौल ने महान त्यागी, तपस्वी, समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मोत्सव मनाया गया। उनकी मान्यताओं को जन–जन तक पहुँचाने के लिए स्कूल के विद्यार्थी व समस्त स्टाफ ने ओ३म् के ध्वज, वेदमंत्र बोलते हुए 10 कि.मी. लम्बी शोभा यात्रा की। यात्रा का प्रारम्भ स्कूल प्रांगण से हुआ और निजामपुर रोड़, मेहत्ता चौक होते हुए यात्रा शहर में प्रविष्ट हुई।

मोहल्ला खरखड़ी में श्री ओमप्रकाश पुलयानी, प्रधान आर्य समाज, खरखड़ी, श्री ओमप्रकाश विधायक, नारनौल एवं समस्त आर्य समाज खड़खड़ी के सज्जनों ने बच्चों का स्वागत किया। विधायक ओमप्रकाश यादव ने बच्चों को शहर में आगे बढ़ने के लिए आशीर्वाद दिया। शोभा यात्रा सामान्य अस्पताल, काठ मण्डी, अनाज मण्डी, अग्रसेन चौक, पुलिस लाईन, मोहल्ला नलापुर, पी.डब्लु.डी. रैस्ट हाऊस, महावीर चौक, होंड़ा चौक हाते हुए बालभवन में सम्पन्न हुई।

इस शोभा यात्रा में कप्तान जगराम आर्य ने विशेष सहयोग दिया। बच्चों ने मंत्रोच्चारण ओ३म् के झण्डों तथा नारों के साथ उत्साहपूर्वक यात्रा में भाग लिया। इस यात्रा का समस्त आर्यजनों एवं शहर निवासियों ने स्वागत किया। स्कूल प्राचार्य वीरेन्द्र कुमार ने सभी लोगों का सभी अखबारों में समाचार के माध्यम से धन्यवाद किया।

☞ *पृष्ठ 01 का शेष*

टंकारा ऋषि बोधोत्सव ...

कुमार अग्निहोत्री (अहमदाबाद) को वेद प्रचारक के रूप में दिया गया। यह सम्मान प्रतिवर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई की ओर से इस अवसर पर दिया जाता है।

श्री जे पी शूर ने अपने वक्तव्य में कहा कि स्वामी जी के इस नगर में आकर महसूस हुआ है कि यहाँ पर कुछ तरंगें शरीर और आत्मा को प्राप्त हो रही हैं। उन्होंने संकल्प लिया "मेरे अन्दर कोई अवगुण विद्यमान है तो मैं उनका त्याग करूँगा और आर्य समाज के सिद्धांतों के अनुरूप कार्य करूँगा। उन्होंने कहा संस्कृत की रक्षा के लिए डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति तथा इसके अन्तर्गत चल रहे सभी विद्यालय तत्पर हैं और आगे भी हम सदा प्रयासरत रहेंगे। उन्होंने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से पाँच लाख का चैक टंकारा ट्रस्ट को भेंट किया।

श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आज हम सबको प्रण लेना होगा कि संस्कृत भाषा की रक्षा के लिए हर सम्भव प्रयास करेंगे। इसी सत्र में टंकारा समाचार का विशेषांक "बोधांक" का भी विमोचन उपस्थित मंचासीन महानुभावों द्वारा किया गया।

रात्रि सत्र में श्रद्धांजलि सभा श्री योगेश मुंजाल की अध्यक्षता में आरम्भ हुई जिसमें श्री दिनेश पथिक द्वारा स्वामी जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई और इसके अतिरिक्त पधारे हुए आर्यजनों ने स्वामी दयानन्द के प्रति अपनी–अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

☞ *पृष्ठ 01 का शेष*

आर्य समाज ...

आर्य समाज, वैदिक संस्कृति से सम्बन्धित अपने विचार प्रस्तुत किये।

स्कूल की प्रिंसीपल श्रीमती रजनी सल्होत्रा ने सभी का धन्यवाद किया एवं ऋषिबोधोत्सव पर स्वामी जी के प्रति उनके सामाजिक सुधारों की चर्चा करते हुए आभार प्रकट किया।

आर्य समाज (कॉलेज विभाग) बटाला की प्रधाना प्रिंसीपल प्रो. डॉ. (श्रीमती) अजय सरीन ने अपने संबोधन में कहा स्वामी जी की जयंती एवं ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर "हमें आत्मबोध करना चाहिए" यह दूसरों के छिद्रान्वेषण से बेहतर होगा। स्वामी जी के स्त्री शिक्षा सम्बन्धी भगीरथ प्रयत्नों की चर्चा की।

श्री जगदीश राज साहनी, चेयरमैन स्थानीय समिति ने भी इस आयोजन के लिए डॉ. एम.आर.एस. भल्ला डी.ए.वी. स्कूल एवं आर्य समाज (कॉलेज विभाग) बटाला के पदाधिकारियों को मुबारकबाद दी और विद्यार्थियों को प्रातः काल उठकर शिक्षा ग्रहण करने के प्रति प्रेरणा दी।

प्रिंसीपल प्रो. डॉ. (श्रीमती) नीरु ने कहा ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर स्वामी जी के जीवन से प्रेरणादायक प्रसंगों के माध्यम से हमें जिज्ञासु होना चाहिए तभी हम सीखने की प्रवृति को संजो सकेंगे।

प्रिंसीपल डॉ. वरिन्द्र भाटिया ने इस आयोजन के लिए सभी को भजनों एवं विचारों के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए शुभकामनाएं दीं।

इस कार्यक्रम के मुख्यतिथि श्री बालकृष्ण मित्तल ने पुरस्कार विजेता विद्यार्थियों को अपने करकमलों से पुरस्कृत किया गया।

इस कार्यक्रम का विशेष आर्कषण पाखंडखंडिनी पताका धारक बाल स्वरूप दयानंद रहे। आयोजकों द्वारा उनका विशेष अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर ऋषिलंगर का आयोजन भी किया गया।

Registration No. R.N.I. 39/57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2018-19
Posted at N.D.P.S.O. ON 07/08-03-2018

डी.ए.वी. सैक्टर-49, गुरुग्राम में हुआ 21 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन

परीक्षा में विद्यार्थियों के उत्तम परिणाम की मंगलकामना करते हुए डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सेक्टर–19, गुरुग्राम में 21 कुण्डीय यज्ञ का भव्य आयोजन विद्यालय के प्रांगण में बड़ी श्रद्धा से किया गया। इस शुभ अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डी.ए.वी. सी.एम.सी. के वाइस प्रेसिडेंट, एवं एल.एम.सी. के चेयरमैन श्री प्रबोध महाजन पधारे। इस यज्ञ में श्री योगेश मुंजाल, वाइस प्रेसिडेंट श्री मोहन लाल तथा श्री एम.एल. सेखरी तथा श्रीमति अपर्णा एरी ने अपनी विशेष भागीदारी दी। विद्यालय की प्रधानाचार्या ने अतिथिगण का स्वागत भेंट स्वरूप 'नई पौध' देते हुए किया।

विद्यालय के प्रांगण में 21 यज्ञ कुण्ड लगाए गए थे तथा सभी कुण्डों के चारों ओर विद्यार्थी, अध्यापक व अध्यापिकाएँ यजमान के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर को लेकर विद्यार्थियों में जो उत्साह था वह देखते ही बनता था। यज्ञ कुण्डों की प्रज्ज्वलित अग्नि पूरे वातावरण को शुद्ध कर रही थी। वेद मंत्रों के उच्चारण, 'स्वाहा' का स्वर तथा 'ओ३म्' की पवित्र ध्वनि से पूरा विद्यालय परिसर गुंजायमान हो रहा था।

यज्ञ की समाप्ति के उपरांत श्री प्रबोध महाजन ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए गायत्री मंत्र का महत्त्व बताया और प्रतिदिन इसका पाठ करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार हम अपने तन की शुद्धि के लिए प्रतिदिन स्नान करते हैं, उसी प्रकार हमें अपनी आत्मा की शुद्धि के लिए यज्ञ, प्रतिदिन गायत्री मंत्र का पाठ व ओ३म् ध्वनि का उच्चारण करना चाहिए। इसके अतिरिक्त परीक्षा के समय क्या–क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए इस विषय पर विशेष जानकारी देते हुए विद्यार्थियों हल्का और शुद्ध भोजन करने को कहा ताकि उनका आचार और विचार शुद्ध रहे। इस प्रकार उन्होंने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए आशीर्वाद देते हुए उनका मार्गदर्शन किया। इस पावन अवसर पर मुख्य अतिथियों के कर–कमलों से प्रत्येक कक्षा के तीन विद्यार्थियों को उनकी विवेकशीलता , वैचारिक पवित्रता और हर कार्य में पहल करने की भावना (Initiative) के लिए पुरस्कृत किया गया। अंत में विद्यालय में उपस्थित सभी जनों को प्रसाद वितरित किया गया। इस प्रकार विद्यार्थियों को परीक्षा से पहले सकारात्मक ऊर्जा से भरने और उन्हें शुभाशीष देने के उद्देश्य से किया गया यह यज्ञ सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

डी.ए.वी. पुष्पांजलि में वैदिक चेतना शिविर

विद्यालय द्वारा छात्र–छात्राओं में नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी विद्यालय प्रांगण में एक दिवसीय चेतना शिविर का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम प्रातः योगासन व प्राणायाम का आयोजन किया गया जिससे बच्चे स्वास्थ्य की अनिवार्यता को समझ सकें। योगासन सत्र के बाद यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें सभी ने श्रद्धा से आहुति प्रदान की। डी.ए.वी. सिंगापुर से पधारे आचार्य मनोज शास्त्री का बच्चों के मार्गदर्शन करने वाला उद्बोधन हुआ।

प्रधानाचार्या श्रीमती रश्मिराज विस्वाल ने छात्र–छात्राओं को सम्बोधित करते हुए चेतना शिविर की प्रासंगिकता की चर्चा की और कहा, यह डी.ए.वी. की महान परम्परा है कि वह अपने विद्यार्थियों में नैतिकता के साथ–साथ आचरण में भी वैदिकता हो, इसका प्रयास करती है। चेतना शिविर हमारी समझ को व्यवस्थित दृष्टि देने का कार्य करने का मन्त्र देता है। आज के समय में हमें पहले से ओर ज्यादा समझ और सक्रियता से कार्य करने चाहिए। तभी हम ठीक से कार्य करने पर सन्तोष व्यक्त कर सकेंगे।

डॉ. नारंग जो दिव्य भारती योग संस्थान के अध्यक्ष हैं, ने "हमारी दिनचर्या कैसी हो?" इसको आधार बनाकर उद्बोधन दिया। उन्होंने दिनचर्या को व्यवस्थित करने के अनेक उपाय बताए, डॉ. नारंग ने अनेक योग क्रियाऐं बताईं, उनको करवाया और प्रतिदिन करने का आग्रह किया।

विद्यार्थिओं द्वारा आर्य वैदिक भजनों को प्रस्तुत किया गया। कुछ देर विश्राम के बाद पुनः सभागार में एकत्रित होकर आर्य समाज के सिद्धान्तों की चर्चा की गई। साथ ही छात्र–छात्राओं के जिज्ञासा युक्त प्रश्नों के उत्तर भी दिए गए। तदुपरान्त शांतिपाठ के द्वारा कार्यक्रम समाप्त हुआ।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल युनिट-8 ओडिशा में ऋषि बोध उत्सव

डी.ए.वी. स्कूल युनिट–8, भुवनेश्वर के प्रांगण में "ऋषि बोध उत्सव" हर्षोल्लास से मनाया गया जिसमें विद्यालय की प्राचार्या डॉ. श्रीमती भाग्यवती नायक ने दीप प्रज्ज्वलित करके यज्ञ का प्रारंभ किया तथा अपने अभिभाषण में स्वामी दयानन्द जी की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए, उनके आदर्श को अपने जीवन में शामिल करने के लिए सदैव सत्य को धारण करने के लिए प्रोत्साहित किया। ऋषिबोधोत्सव के शुभअवसर पर आयोजित वैदिक मन्त्रोच्चारण प्रतियोगिता में कक्षा तीसरी से लेकर दसवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों ने तीन ग्रुप में भाग लिया। प्राचार्या ने कहा मन्त्रों में इतनी शक्ति है कि इसके उच्चारण मात्र से ही मन शुद्ध तथा आत्मा पवित्र हो जाती है। डी.ए.वी. का प्रत्येक विद्यार्थी गायत्री मंत्र से ही दिन की प्रारंभ करता है तथा ईश्वरीय सत्ता को महसूस करते है।

इस मौके पर विद्वान् वक्ताओं के द्वारा बच्चों के वैदिक मंत्र पाठ का मूल्यांकन किया गया। कुल मिलाकर 2000 विद्यार्थियों ने भाग लिया। जिसके फलस्वरूप सबजूनियर में कक्षा 3–बी, जुनियर में 8–एफ तथा सीनियर में 10–डी बच्चों को श्रेष्ठ चुना गया। गौरतलव है कि ऋषिबोधोत्सव के पावन अवसर पर विजयी विद्यार्थियों को मानपत्र तथा पुरस्कार से सम्मान किया गया।

विद्यालय के धर्मशिक्षक आचार्य सन्तोष कुमार के द्वारा आयोजित इस उत्सव में विद्यालय के सभी कार्यकर्ताओं के साथ छात्र छात्राओं ने कार्यक्रम में भाग लेकर जीवन को यज्ञमय बनाने के लिए आहुतियाँ प्रदान कीं। शान्तिपाठ के साथ सभा समाप्त हुई।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**